2412F---

ब्रखीरी सविदानन्द्रसिंह ऋष्यस्, सरस्वती-भएडार बॉर्कापुर, पटना ।

52r-

स्राज्यसाद खन्ना दिन्दी-साहित्य प्रेस जानसेनगंज, प्रयाग ।



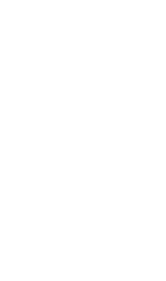
किया है, जो उचित भी है। परा-साहित्य की साजकल हमें बतनी सावश्यकता भी नहीं है, जितनी कि गण की। सम्तुः

इन ही दिन हुए, 'हिन्दी-गध-रहावडी' के नाम से मैंने हिदी के दस-पांच पुरंघर लेखकों के सरस लेखों का एक बोटा संपद्द संकलित किया था। मंगह कैसा है, इसे कहने का मुक्त अधिकार नहीं। आज उस संप्रह के प्रकाशक सहीदय की अनु-श्रति सं एक तुमरा 'संबर' उपस्थित करता है। यह संबह परा का है, अतः इसका नाम मैंने 'हिन्दां-रण-स्तावली' रखा है। यह भी उसी 'स्टैन्डड' के लिये समहीत किया गया है, जिसके लिए कि 'गगु-रश्रावजी' का सकलत हुआ है। जिन कवियों की सरस कवितार्गे इस पुलक से सकव्तित की गई हैं, उनके संबंध मे दी-वी चार-धार शक नीचे दिखे जाते हैं। इसके पहले यह कर देना उचित होगा कि इस पुस्तक में केवन हेमी कविताओं की स्थान दिया गया है. जिनमें भगवद्भक्ति, विश्व वेम. बीर भाष. प्रकृति-सौश्वर्य श्रीर नीति नैपण्य का चित्राकण देखने से श्राया है। भूगार रममव पण, चिनाक्यक नवन्कारपण और सरम होते हुए भी विचार्थिया की र्यष्ट्र से, उस सवह से सकल्ति नहीं किये mir ?

सबसे पहले चहुबहावी जाते हैं। यह जातीय कवि थे। हिस्टू जातिक जाति पिनते को इस्टोने जातित किया है। हिन्दु भी का उत्थान जीति पतन देखाना है। यो जुद का पत्मी पे द जातिन। इन्हों सहाकवि के सभी लज्जण मिलते हैं। दिवान भाषा में होने हुए भी इनका वृहन्द्र प्रस्था हिस्टी की असून्य सपित है। इसे इसर्प अभिमान है। इनके बाद बहान्या क्योरमा को ग्यान दिया गया है। इस मन दिगोगीन के विषय में कहा हो क्या ना सकता है ? कवार ने 'उधर' की वान कही है. 'इभर' की नहीं।



ीहै। रचना में काची मिठास और चीज है। अब महाकृति केरावदास को स्थानित । भाषा-साहित्य में सूर, तुलसी चीर कवीर के बाद इन्हीं का स्थान है। यह काज्याचार्य थे। इनहीं कविता हिच्ट और दुसइ अवस्य है, पर सरसमा और धमकार से राली नहीं । दिंशी भाषा के यह 'माय' हैं। इसके धनन्तर भक्तवर रसतानि और तत्परचान् महाकवि सेनापति की हाँबर रचना की यानगी भिनेगी। पहले को रखना विशुद्ध प्रेमकी स्वन्त्र बारमी चौर रूसरे की कविता कवि-कला-किन्त धाभूपणी की मंजूपा है। इसके वाद सतवर मुन्दरदास जी की 'बानी' दृष्टिगत होगी।' वनके परो। में सरमता के चानिरिक्त बहुत कुछ पते की भी बात हैं।श्रुगार-स्वरूप विदारों को भी हमने स्थान निया है, पर पंत्रराहणे नहीं, उनकी भक्ति और नीनि-सवर्धा मुक्तियाँ ही संबर्धात की गई हैं। हम कवि-पक्ति में इन्हें केराव के बाद प्रतिप्रित करेंगे। विहारी का भी, भाषा-माहित्य में, एक विशेष स्थान है, इसमें सर्वेह नहीं। मन्परचान त्रिवार्डा-वधु-भयण और मतिराम-सीर फिर लाल का नवर काना है। भूषव हिंबीभाषा से बीर रस के एक मात्र कवि हुए हैं, इतके सब र में इतना हो कहना पर्याप्त होगा। मतिराम का भाषा-मीयुव अपवं बर्णन में में चर्ना और सरभता चनुठी है। लाल वरंकार इ के बीर-कवि व । बार-माहित्य में भवाग की कविता के बाद दर्जी की रचना का स्थान मिलना चाहिए। श्रव महाकवि देव का लीतिए । यह भी एक क्षेत्र काव्याचार्य से । इनकी कविता मुधारम में हवी हुई है। प्रयेक मुक्ति अमृत्य है। माध्ये प्रमाद श्रीर श्रोज नीनोही गुगो को उन्होंने अपनी कवि ताम संघ निभावा है । साहित्य-जगन को उस महाकृति पर श्राम मात करना चाकिए। इनके बाद बुन्द हैं। इनकी मृक्तियाँ नीति-सविधिनी हैं. जिनमें गागर में मागर भरने का प्रयन्न किया गया











हिन्दी-पच-रब्रावली

याजी सुबंद हुय गय पत्रान, दौरे सुमज्ञि दिस्सह दिसान ॥३०॥ तुम्ह लेडू लेडु मुख जंपि जोय, सन्नाह सूरसव पहरि कोच ॥३१॥ पहुँचे 🛮 जाय तचे तुर्रम, मुच मिरन मूप जुरि कोघ जग ॥३२॥ वल्टी सुरात प्रविशत बाग, थिक सुर गगन, धर धमत नाग ३३ करमान बान छुट्टी अपार, लागत खोह इमि सारि घार ॥३४॥ भगसान चान सब बीर नेत, चन शोन बहुत अर रुक्त रेत 13(1) सारे बरातक के जोध ओह, परि ह'ड सह धारि सेन सोह ॥३६॥

×

परे रहत रिन-मंत अर्ग कर्नि दिक्षिय मरर रूप। जीति बन्दां पृथिमत रिन, सकल शर भव गुप्प ॥३ ॥। पश्मावति द्रमि ने चल्यां हर्गय रात प्रथियात । एतं परि पतमाह० हा भई ज बाति भवात ॥३८॥

मई जुकानि कवान जाय साशयकीन स्रा धाल गरी प्रतिश्व की व्युत्तरक हर।। क्राच भोच राज अन्त क्रियपूर्वा धन रियय बान नहाउट । १ र र वर्ष्ट सर स १४॥ पर्वे पहार 💴 सन्दर्भ । वर्षि नः गृत्व वा नसम्बत श्राय हकार्य न्द्राह कोन न ना न न्यान उठ ॥३५॥

475 1-1 8 124 4 an + " 6 2 1 5 2 2 27-1 991 41 क्षियाद निरम्पन पर । या . रम वा दा व्यान . न दार्गय पर पाराम का श्री बर्ट का था पर उरस्पार न स्था रेन्स, पश्च कर्य के लग सुमार, cant tem er taut gefar ur ein munte mbr artin einf a ध्यम्बर स्टब्स्स हिला



12

सन के मारे बन गये, बन विज सक्षी साहि। कह क्योर क्या की जिए, यह सन उहरे नाहि।(७०१) क्षिया सोवा क्या की, जागन की कह वीप। ए दम होरा साल हैं गिति-रंगित हरि को सींप १०९३

पदम द्वीरा ह्याल हैं सिनि-नंगित हरि को सींप 2003 सांस आहारी सानवा परतझ शाहल व्याग। ताकी सगित सत करी, परत रंग में भग 4048 हिल्हू के दाया नहीं, सिठर तुक्क के नाहि। बहु कसीर दों में गये, कार्य चीनानी सार्थि 1048

हिन्दू क दाया नहा, सबस तुत्क क नाह)।
बहु त्यार दो हो गये, करा ची-किस साह 1942 क्योर सनवाज नाम का, सर सनवाज नाहि।
नाम-पियाना जो िचे जो सनवाज नाहि (७४३)
स्टास सरवा स्टा'ड के उड़ा पानो पीन।
निम्म विश्वानी सुन्दी, हर स्टाप्य प्रीव १७४५।

हैरित विश्वासी पुण्टी, सह त्यप्रवाद जीव। अश्वा सम्बन्धत है प्रधानन आया बन्ध सीर। आया सम्बन्धुत सन्ति है सन सन तरियाओं र ७६॥ पील, पर्रविद्वास सुज्ञा, पश्चित हुणान शेला। बाहे सम्बन्धत सह पर्दे सी पर्दिन रोगा। अश्वा एकै सार्वे सन सी सन सार्वे सन पार। ची गरि सेवे सन की प्रकार कर्मा जीवापा अश्वा

तो गि सेवे सक को, को की अने अन्य गड़डी सर्वत से साह सिने, सोशत ल्या त्यार। अस्य न सोत इस्ता, सित सुपना है ताव ॥०९॥ साक पड़े दिन बीतरे, चक्की बीतर रोग। चल चक्का वा वेसहा जल के नालेप १८०॥



कवर्षुं कान्त् कर छोषि नंद पग है किर धावत । कवर्यु धरनि पर विटिचे, मन महं चसु गावत ॥ दव्यु उडिट चर्मे धामको, घुटुक्त करि धायत । मुर्स्थाम-पुक्ष वेस्ति, महर अन हरण पदावत ॥२॥

्ड होदी-होटी गुड्यां औंगुरियां होटी,

प्रधी हो नग जोति मांवी मानों कह दखन पर ॥ जिल्ला कांगन गॅडी. दुभक दुमक दोती, स्नक सूनक वार्ति वैजनी सुद्र सुरुष ॥

हिंदिनी करिन करि हाटक रमन जटित

शृदु कर कमल पहुँचियां रुपिर वर ॥ रिकारी पिक्षीरी भीती और देवमा भीती ,

बारक दामिति माने। खाँदे बारेर बारिधर ॥ इर बचनमा कठ बद्धना माइले बार,

वनी उटही, मिल िस्टू मुनि सन हर । ५ नर्गान नेता । स्वयंतिबन चारै,

मुख्य साथा पर योगे समिन समझ मर ।

बहुद्धं वेत्रकत्तन-त्रास्थि, बालुद्धिः, स्वति स≈त्रास्ति फेसस्युपः ।

'६ तर्द्ध कि नांद्र हैया है है इत्राह्म लग्ने,

र रदास्त्र सन्दर्भन तर वचन तर च च्छ

रक्षान सन कालनाय करे ६९ सम राष्ट्र पुटुजयन भी १४ वस्ता पराद के परे ३

1- 1-458



मेरेग, मोहि दाज बहुत विम्मयो ।
मामां कहत, सोल को छंतां, तू ज्युमति कर जायां ॥
मामां कहत, सोल को छंतां, तू ज्युमति कर जायां ॥
मामां कहत, सोल को छंतां, तू ज्युमति कर जायां ॥
द्वित पुति कहत कीन है सावा, को है तुमरो तातु ।
मोरे नेंद, जानोशा गोर्स, तुम कत क्याम सरीरा ।
दुद्धी रेंदे स्मत वाल करत, सिमे देत वस्त्रीत ॥
मोहन की मामां सीठी, वागहि क्याहुँ न छीती।
मोहन की गामां सीठी, जामां मुनि मुनि सिकी ।
दुन्यु छोट्ट स्वमद वालां, ज्यामति मुनि मुनि सिकी ।
दुन्यु छोट्ट स्वमद वालां, ज्यामति मुनि मुनि सिकी ।
सारायाम मां गोवन की मी, ही विया न पून ॥

सैया सेनी, से सामस नीर प्रायो।
सेना अब शेयन के पाई सन्तम सेनि प्रायो।
सेना प्रत्य श्रेयन के पाई सन्तम सेनि प्रायो।
से बाद कर्षारम का बन्दारा लाग कि रिप्ति वायो।
से बाद कर्षारम का बन्दारा लाग किरिप्ति वायो।
सेनाद कर्षारम का बन्दारा लाग किर्माण करायो।
सेनाद कर्माण के सेनाद करायो।
सेनाद कर्माण करायो।
सेनाद करायों करायो वहनीद नाव न्यारो।
स्रमास कराये कि तथा।

रसारा मैगा ससा हेदर चौगो नोटो ? फरना कर साथ हुँ३ प्लन सङ्ग्र च्या है छोटी ॥ तुना करन वर्णकों को नो या है है प्लानी सोटी।

[ा] **भाष**ाण ६ वट महर र रिकार पुत्र थ वस्तर ।



हिन्दी-पग-रत्नावली

दे मैण, भें ररा चक डोरी।

जाइ लेंद्र बारे पर शानो, कान्हि मोल लै गरी कोंगे॥ ले साथ होन स्थाम तुरत ही. दिन रहे देंगरम बहु दीयी। श्रेया क्रिनः चौर को राह्ये, बार-बार हरि करत निहीसी॥

बोरि िय सब सन्दा सरा के, रश्लत स्थाम सद की पीरी। तैमद हार तमड सर बातक, कर भेंचग-चरुरिव की जारी ॥ रेखति कर्नाम जमाना यह छाच, नि.मान बार-बार मुख साँधी !

सरदाम प्रम हैनिकास रूलन, यज-वन्ति हम हारति तोरी १२ .42 चार में गड भगवन रेही।

क्षापन र नातनात्त्रक यान दर में हैही। गमा चर्चाट २२० वस्त बार, दशो चयनो भ्राति। तर्र र तक का बादना रेख आयन होते राति।। यान रात रोज " जरन रह प्रत्रत है साना। There en a . मुख्य र .. . तमहि साम त 4 47 4E

भूरता , जाजान र पान्नी हेद Heatt

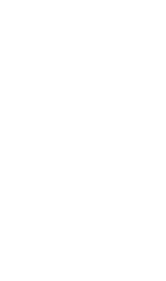
"" " 147 + A.

ক ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ ৷ আপুনিবা লাভ নত কংটি লা কলগণনাক ৰাজীয়া get in bund ber bei beite bar metell ! च्यूच मार्ग चार्य वाहन वर्ग सासननादी । मर्गेशम रूप रोजर सर हमा, दक्षिण लाग **की जोटी** स**रे**शा 42



हिन्दी-पर्गा-स्मावली

वेशन हैं भी बमानमन तारायन प्रमु जम। वन में पुरुषायन मुदेश शंध दिन सोधिन चास।। या बन की वर वाल्किया बनही बनि कार्य। शेख गर्दमा मुरेश गरेग 🗉 पारि पार्थे॥ ४॥ पट प्रशिक्त हमाजान कल्पनक सम सप नायक। विन्तामनि समें संयंग भूमि विक्ति प्रत्यायक ।। तिन महें इक ज करपत्रक लाग रही जगमग जोती। पात मृत्र फन फूल सकल होग मांच मानी ॥ ५॥ तर मृतयन क गान्यत सम गामकात स्थि। बर पदमर मान प्रामग्रानिन पर तह पति॥ भागक्षा स्थारा यात नव पान रहति नित 174 1844 40 1 11 81 824 1 ELATER 11 5 11 ना तरकार सार पार गाउँ वा ताना और साहित. 4 18 6 - · + + + + · · + 4 4 4 1 4 1 4 1 4 1 " " read Med a " ded well of AP AR AR AR AR which's me in the post of the मर . व मा मा यह । व मान्य सार पार्टन * ** * * * ** ** ** * ** ** *** ** * * * * ** प्रदेश क्षेत्र । १ अर्थ सम्बद्धाः स्थाने सूच द्वार



हिन्दी-पश्च-रत्नावली सव निर्देश्म घरमस्त पुनी। नर श्रह नारि चतुर सव गुनी । सब गुताय पंडित अब ग्यानी । सब कृता व नहिं कपट स्थानी ! शोश

38

राम राज नभगेल' सुनु, सचराचर जग माहि। काल-करम-सुभाव-गुन-इत दुख काटुहि नाहि॥३॥

भूमि सन सागर मुमेखना। एक भूप रघुपति कोसला। भुवन अनेक रोम प्रति जासू यह प्रभुता कछ बहुत न तास् ह सो महिमा समुकत प्रमु केरी यह बरनत हीनता पनेरी।

सी महिमा रुगेस जिल्ह जानी । फिरयहिबरितनिल्हहै रिनमानी क मोड जाने कर फल यह जीजा। कहाई महाम्जियर हमसीला ! शम राज कर सुर्व संवदा। बर्गन संबद्ध प्रतीस सारवा म

सब धरार सप पर उपकर्श विश-चरन-सेनक तर नारी। स्व-लारि-प्रत-रत सथ अवर्षा तेवन-यप-राम पति-वित-कारी।

वड जॉनस्ट कर भेद जर, नस्तक मृत्य-लमाज। जिन्ह मनहि अस सनिय जग रामचेट रे राज ॥ ४ ॥

फुलहि फलहि मदा नह कानन। रहीह एकमँग राज प्रचानन ॥

्रु सेता मृग् सहज वैक विसराई । सबन्दि वरसपर श्रीति बडाई ॥ े कुराहि स्वयं सुग जाना उन्हां । बाधव बर्गट वन कर्गट बनका ॥ मीतार पत्रन मुर्गन बह सदा। गुजन ऋषि नेइ बलिसकरंदा है

१ संस्तः, काक मुनोदि, सन्दान, राग चरित कह रहे हैं।



राम करहिं भ्रातन्ह ५र ग्रीनी । नाना मांवि सिखावहिं नीवी 🏾 इरियत रहिं नगर के लोगा। करिं सक्ल सरदुरलम भोगा प्र अदिनिमि विधिर्दि सनावत रहरी । श्रीरधुत्रीर-चरन-रति वहरी ॥ दुइ सुन सुन्दर सीना जाये। लब कुम वेद पुरानिन गर्य। दोड चित्रयो चिनयो गुनमन्ति । हरि-प्रतिविग्य मन्द्वं चितम्हरू। दुइ-दुइ मृत मत्र भातन्त्र करे। मये क्य शुनसीड धनेरे।

शान-विकासीत च न, माया-मन-गुन-पार । मोइ मधिदानद्यन कर नर-चरित उतार ॥ ७ ॥

पानकाल सरज् कृष्टि सञ्जन। वैद्वित सभा स**ह दिज स**ञ्जन 🎚 कर पुरान वास्तव क्यानि । सुन्धि राम जरुपिसव जानिहिं॥ अनुत्रहि सञ्जूत भोजन करता। वे स्व सकल जनती सूख भर**ही**॥ अरम समुद्रेन १नड अहि। सहित दवनस्य उपयम जाई॥ रूमा वेठ रामगुन्ता । यह हतुस स समित-व्यवसाहा सुन १ विमाद गुन चति साथ राव दे। यह ४-४ट्रिक्सिया यकडावदि॥ सब के मृत गृह हारि पुराना । राम परित पापन विधि नाम " नर धर नारि राम गुन गान्दि । सरदि द्वम निस्तिततनज्ञानिर्दि

% प्रश्निक्षां स्टब्स्य स्टब्स सहस्था और कॉर सहार वह बूप सम विराज गरी।

नारदादि सनदादि मुन'सा । उरशन लागि वेरसकाधीसा ॥ दिन प्रोत सक्क काराच्या श्राप्तरि । देखि नगर विराग विमरावर्डि ॥



हिन्दी-पद्म-रत्नावली

वंदे बजाज सराफ बनिक धनेक मनहुँ कुपेरते। सब मुखी सब सबरित मुन्दर नारिनर सिमु जरठ जे 11?३॥ शोध

34

चत्तर दिसि सरजू यह, निर्मंड जल गंभीर । थाँधे घाट मनोहर, स्वन्य पंक नहिं तीर ४११॥

दूरि फराफ कथिर सो पाटा। जहूँ जलपियहिंगाति गम-ठाटा । पनिघट परम सनोहर , नाना । तडां न पुरुप करहि असनाता । राजपाट सब विधि सुन्दर बर । मर्जाई वहां घरन चारिड नर ॥ तीर-सीर देवन्ह के मंदिर । चहुँदिसि जिन्हके उपयम मुन्दर॥ कहुँ कहुँ सरिता-सं.र खदासी वसर्दि ग्वानरत मुने संन्यासी॥ सीर-सीर शुलसिका सुदाई। एन्द-बृन्द बहु मुनिन्द लगाई। पुर-सोमा कुछ वरनि न जाई। बाहिर नगर परम रुचिराई । देग्वत पुरी ऋखिल अघ भागा । बन उपवन वापिका तहागा ॥१५॥

बापी तहाग व्यनूप हुप मनोहरायत मोहर्हा। सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोदहीं ॥ बहु रंग कन अनेक सम क्लाई मधुप गुजारही। श्राराम रम्य पिकारि संग-रव जनु प्रविक्रतंकारही ॥१६॥

रमानाथ जहँ राजा मी पुर थरनि कि जाई। अनिमादिक सुरा संपदा, रही अवध सब द्वाइ ॥१७॥

(राम-चरिव-मानस)

६—सॅकानहरू -

[कुर्वरर—र्वत सम्बन्धाः]

र इन्ह

स्वातात क्रांति सभी शरूसात व्याविकार्त क्रम है सहीत तिस्मित के क्रिक्स भी । बीतुरी क्षाम होते करूब स्वेतून स्वाह्म राजन स्वास व्यावकार्त स्वित करू भी ११ कुठते क्रियां क्षीम बच्ची स्मान स्वाह्म होते क्षामा स्वाह्म क्षाम्य स्वाह्म नेता क्षित्र स्वाह्म स्वाह्म

الله

वार्डी विकार विकार वार्डिंग्स कार्डी तह रोक्से के श्रेष्ठ समस्य स्मारी है है है कोम-के किया मार्ग है मुझे दुव्हें हु होने सम्हरीन कार्यों की कार्यों है न दुक्की कुंक्स कार्यों की कार्यों के हैंसे बाहु कर बाहु करों कहा कार्यों हैं 'क्सम कार्यों, कार कार्य कर्यों हैं। 'क्स

ع

जो हा हुए क्विये हुस्से है. 'क्स स्केर यही यही हारे हारे हैं।

३० हिन्ही-पद्य-रत्नावली

कर्दा वात, मान, भान, मगिनी, भामिनी,भामी, छाटे छोटे छोदरा चमागे भारे भागिरे॥ हाथी छोरो, भोरा छाँगे, महिष धृषम छोरा,

हेरी द्वीरो, सेवै सोजगारी जागि जागि रे ॥" तुल्सी विशेषि श्रुहुजानी जातुष-ना कर्हें,

तुलसी विरोकि व्यह्तानी जातुषनो कहें, "बार बार कहीं, विव कपि सोंन लागि रे ।३।

बरे। विकराल भेष देखि, मुनि सिंह-माद, उट्यों सेंग्नाद सर्विकः ए वहै रावनी ।

थेग जीत्यो भारत प्रताप भारतह काटि, कालक कराजना यहाई जीतो बावनी प्र

तुषसी सपाने जातुबान पदिनान मन, "जादा एमा दून मा मादिश प्रवे श्रापनो ।"

"जीका एमा दून मा मादिश कर्वे आपनी।" काहें की कुसर सर्वे सम समस्य र इ.

थियन व / सा । शिवर के यः। यसी ॥४॥ • • •

पाना पानी पाना सब रानी अपहुसनी करें

जनि नैयराः, यशि चानि सन्यानि है। इसने विसार, सं अयर संस्थानियन

चानन सुन्धान कर्र क्या र काक पालिते ?"

भूतमा संद वै सीर्णिशय पुरिसाय प्रते 'काल साम कि तान में सहत्यों केता करित है।'

'कार राज कि ता न से स्टब्स केता फ जि है है वापरी विभीयन प्राप्ति कार बार सहस्त्रो,

^{*} बानर बड़ा बटाइ घंने पर पालि**है**" ॥५१



37 विन्दी-पश-रन्नायजी मुल्ली निहारि श्रारि मारि वै वै गारि कहैं।

" वावरे, गुराहि थैर भीन्द्रो सम सम माँ" ह८३ .45

राक्षत्र भारतस्य सम्बद्धतः विसादन्त्ररः िन दिन विकास सकल सम्पर्धक मेरे ।

नाना उपयारि वरि हारे सुर शिह सुनि ह य न विमाय थोन पार्च में मनाफ मा ।

राम की र तथ न स्मापनी समीर-मून, उत्तर वैशा र-वार सावि सरशक सा ।

राम्बान १८ स्टबाह रह जानकप.

ere cen mertened ame são are

(steerest 1

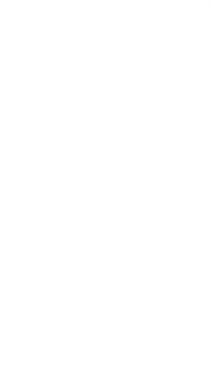
21 1 1

4 4 554 # 1

1 470

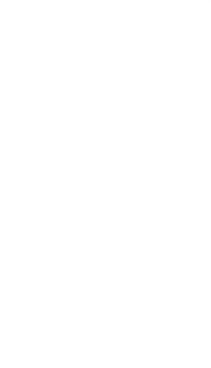
474 10 1

1 . 2 /14 th oth all tal - 2 - 1 - 1 2 - 20 17 0 57 6



तुल्मी तो स्थिति सहै से साँदरी न नेष्ठ प्रश्वन सनस्यात कर ते नज र , निज्ञ स्वर्गन सनुसाति। २ तर पास पाइस्य किटी विशेषक ताति॥ १४ती तुल्मी 'स्रष्टे न सेक्टलस किंद्रे केंद्रि राजनसम्बाध १९४३ स्वर्ग स्थाप प्रश्नेत्वर किंद्रि राजनसम्बद्ध स्थाप प्रश्नेत्वर किंद्रिय स्थाप १८३० स्थाप त्यासे स्थाद राज्य नम्मे स्थाप त्यासे। १८३० प्रश्नेत्वर स्थाप १८३० प्रश्नेत्वर की त्यासे। १८३०

तामा वात्रम कासम्य प्रशे केरिकण सीम स्थान राष्ट्र प्रेरीकी की प्रिकेट कीम ॥२४६ पुरस्कार काक्षण का स्वयसन पर्यस्प्रकार । स्थार साम्बर साम्बर सर्वेत साहार क्रियार २५॥ । राणका ।



हिन्दी-पद्म-स्त्रावली

दोहा

36

कोन्हेसि कोइ निमरोमी, कीन्देसि कोइ वरियार। छारहि से मत्र कीन्हेसि, पनि कीन्हेसि सत्र छार ॥२॥

चीवारं

धनपति यहै जेहि क संसार । सबै देय नित यट न भेंडारू ॥ जॉबत जगत हरित औ चाँटा। सव वह मुगुति रातिरिन वाँटा ॥ ता कर दृष्टि जो सप उपराही। मित्र सत्रु कोड त्रिसरै नाहीं। पश्चि पतंत्र न विसर कोई। परगट गुपत जहां खत होई।। भाग भगुति वह भाति उपाई। सर्वाह' खवावे आपु न खाई।। सा कर बहै जो स्थाना पियना। सब कहँ देव अगुति ब्योजियना॥ सब्हिं काम ता कर हर स्वामा । वह न काह की बास निरासा ह

जुग जुग देत घटा अहि, उभै हाथ सम्म श्रीन्छ। न्द्री जा बीन्ह जगन महें, सी सब सा कर दीन्ह ॥३४

व्यादि एक यरना सा राजा। व्यादिह यन राज जेहि छाजा ग मता सरवदा रात परेहै। की बहि यह राज तहि देई है उपिं बाह्रम, निष्ट्रपति जावा । उसर नाति जो सरवरि पाया ॥ .रथन दाह दार सब नोग। चाटहि करें हस्ति स**रि** जोगू ॥ • इहि भिन्ना नाप वराइ। निमात का रूपि देह प्रदाई **।** र हड जाग चर्च त स्थमध्य । तत्, जाय जवन दुख पास् ॥ - कर रोज्य में अस कोड़ कर बाद मन खेल ने होई है

> ल क्षाम्बार , लहे । से चाल जीह कर । ा ६ ४ न वह सवार पर u/ll



हिन्दी-पद्य-बन्नावन्त्री

हीन्हेंसि जम देखन कहें नैना। दीन्हेंसि खबन सुनै कहें बैना 🛭 दीन्हेंसि कंट योल जेढि माहां। टीन्हेंमि कर-पहन यर वाहां ह

दीन्हेंसि घरन खन्य चलाही।सी पै सरम जानु जेहि नाहीं 🏻 जोवन सरम जान पै युद्धा।सिलै न सरुनापा जग हुँद्धा 🗈 स्य कर मस्य न जाने राजा। दुखी जान जा कहें द्रस्य याता है

35

मरम जान पे रोगी, भोगी रहै नियंत। सब कर सरम सो जाने, जो घट घट रह निन ॥ ७ ॥

बोचाई

द्यति द्यपार करना के करना। बरनि न कोऊ पावे बरना A

मान सरग जो कागः करई। वरनी सान सबुह मसि भरई॥ जॉबन जरा साम्या यन ढाम्या । जॉबन केस रोम परिव पाखा है

जांवत सेंह केंद्र द्वियाई। मेप मूट की रागन नगई है सप्र दिखनी करि दिख समार । दिस्य न जायंगुनसम् दश्यपारु॥

एन कीन्ड सब गुन परगदा । बडि सन्द त पृत्न घटा ॥ 'म नाति मन गरंथ न होई। गरंथ करें मन थाउर सा**ई ॥**

यक गुनवन गमाई बहै होय सो पेग।

श्री श्रम गन संबंधि, जो गन कर श्रमेग ॥ ८॥

(पदावन)



हिर्न्दी-पर्य-रम्नात्रली

कारण दृष्टि चक्क्षींथि गई देखत सुपरनमई,

80

हिंद्र चक्रचीथि गई देखत सुधरनगई, एक वे सरस एक डारका के भीन हैं।

पृदे जित कोड काह सो न करें बात, जहां देवता के बैठे मत्र साधि-माधि मीन हैं।

जहां देवता से बैठे सब सावि-सावि मीन है। देखत सुरामा घाय पुरजन गहें पाय.

'कृषा करि यही कहां कीनो विश्र गीन हैं ?' धीरज क्राभीर के, हरन परपीर के बनाओ

बाउद्योग के महत्त्र यहां कीन हैं 7'४॥ क्षेत्र

होश द्वारपान चरि नर्दे सथा जहा कृतम् त्रदुराय । द्वारपान चरि रहें। अयो बोल्यो सीम नराय ॥५॥

विकास नाम करता क्षाप्त करें। भीम क्षाप्त न मेंशा तन से प्रतु जान, की चाहि वसी दिहि पामा रे भीमी क्ष्मी मा, करी दूकरी चाह वॉव क्षाप्त की तिर गामा है

द्वार मन्त्री दिश न्याँ निकारकी महिला बहुना आध्यान। रीनव्यान, का दहन नाम, बनावन मानुना नाम महिला।।।ध नामक पूरि का इत्याद मृतिक व्यवत हा दूस प्राणा भाष भया सुन्नावक ६ कत्वद्वा क दिव सीक राज्यान।ध मानु कुर हिलाना साम प्राण्यान सुस्वत् हार साम्या।ध प्राच कुर हार नाम साम प्राण्यान सुविक्त साम्या

रात्र भाग जनार जनार भाग क्षेत्र क्षां व्यापनि साहित्य भेरता हरें। एस विशाद पंतायन सा अब कहक जाद देश पृति जाते। हाथ भर जुन कारा स्थार जुन साथ की न किने दिन साथ है राध भरामा का जनार की जाता की कहना को का साथ साथ स्थार पर सर्वक राज दुसार की नेज के जब साथ साथ साथ स्थार



शहैया

भींत भरे पकवान मिठाइन, लोग बर्टे निधि हैं सुखमा के। सीभ्यत्रेर दिवा अभिजावन, 'शेवें बर्धे हरि सग सभा कें।। पारत्य एक कोफ दुनिया मेर पावक' पासर लागे समा के।। मीर्त की रीति फड़ा फहिए, विद्वि चेठे पकारत कर समा के।।१४॥

गीर करते कर के स्टिक्ट करते ।

मुठी दूसरी भरत हो शिक्षिमित पटरी बांद। ऐसी तुन्दें कहा मई सपति की कानपाह हरद। कही श्रीक्षिती कार में, यह पी कीन क्षिपाए! करत मुशामहि काप में, होन मुशामा आप १९८३ १९८१

हाथ गोरा प्रमु को कमना कहै, माथ कहा नुसने चित्र गोरी। महुक खाय मुठी दुइ दीन किया नुसने दुइ लीक-विहासी है स्वाय मुठी निस्सी अथ नाथ ' कहा निज शस्त्र की श्वास विमासी। स्क्रींद्र श्वास समान किया नुम चाहन श्वायदि होन क्रियारी॥१८॥

> पहीं। विश्वकमी सी हिर 'तुम जाय कारे नगरि भुदामाज की रची बेग श्रवही।

रतन-प्रदित धाम. सुपरनमई सक, कोट औवजार बाग फ्रन्टनके मबही ॥

कम्पपृम्ख द्वार राज रथ श्रम्भवार ध्यादे कीजियो श्रपार दास दासी देव छवडी ।

१. एक पान ।



W दिन्दी-पच-रन्तात्रश्री श्रंतर दाव लगी रहै, धुर्धा न प्रगरे सीय। कै जिय जाने आपनो, (कै) जा सिर बीसी हीय।।आ

कमला भिर न रहीम कहि, यह जानत सप केया। पुरुष पुरातन की क्यू, बयों न अंचला होय । १९५. करि रहीम धन बडि घटै, जाति धनिन की बात। घटे बड़े उनको कहा, धास बैंचि जो स्रात ॥१०॥ कहि रहीम संपति सग, बनत बहुत बहु शित । विपति-कमीटी जे कसे, साई साँचे मीन ॥११॥ कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई विहाय। माया समता मोह परि, जंत चले पछिताय ॥१२॥ कडु रहीम कैसे निभै, वेर केर की संग।

ये डोलत रस आपने, बनके काटत अंग ॥१३॥ कागद की सो पूनना, सदजदि में पुरि जाय। रहिमन यह अचरत ठरतो, सोक खीचत बाय' ॥ प्रा कैमें निर्वार्ट नियल जम, करि सबलिन सी मैर। रहिमन वसि सागर विषे, करन मगर सो वैर ॥१५॥। कीरा भिर ने कादिए, मिश्रयन नमक लगाय। रहिमन करुए मुख्य कें।, चहियत इहै सजाय ॥१६॥ दौर, लन, श्रांमी, श्रमी, बर, प्रीति, मदपाम।

रहिमन हात्रे ना दुने, जानन सकल जहान॥१०॥ दिमा बड़न के। चाहिए, छाटेन के। उतपात। का रहीम हरि की घट्या, जो भगु मारी लात ॥१८॥ जब लगि वित्त न छापुने, तब लगि मित्र न कीय। रहिमन अवृत्र अवृतिन, राव नाहिन हिन हाय ॥१९॥

र बाण-वाय संघान स्थान ।



दुरदिन पर रहीम कहि, मूलत सब पहिचानि। माथ नहीं विन-हानि के, जो न होथ दित-हानि ॥३१॥ बोद रहिमन एक से, जौटी बोउत नाहिँ। जाति पान है काफ पिक, बात बसत के माहिँ ॥३२॥ धन दाग श्रव सुनन मों, लगा गई नित चित्त । क्यों रहांग खोजत नहीं, बाहे दिन की मित्त 11221) धनि रहीम जल पंक को, लचु जिय चियत अधाय। परिय-बहाई कीन है. जगन विवासी जाय ॥३४॥ भूति धरत दिल सीम पे, कह रहीम केंद्रि कात ! तिहि रत मृति पनमी नरी, मा ददन राजरात ॥१५॥ भार रेशिय ना देत स्वा, नर धन हेत समेता। न रहीय प्रमु से भविक, रीमेह कह त देश ॥३६॥ पात्रम दांग रणाम सन, काइल साध्या भीत। भाव नी राज्य बाहितें तथ वर्षत्रते छीन।।३३।। धा-म ३१व लोल वर्षा, पर ४६'व कहा समाय। बार बार र १ का दावर रावत चाल किहर नाय (15दी) व १४३ १० व्या १ वर्ष र प्रांति। 11, 12 4 12 2 1 50 100 death 1 50 4 1 12 र या न धार घाट। . . ' IF, VE' . + SITANA II

प्रतास्त्रत्व सः श्राह्मी (वज्ञ हार्य) । स्त्रात्व वस्त्र हा प्रदास स्वयस्त्र हार्य स्था स्त्रात्व त्र तर्र साम्यक्त संस्थात्व । स्त्रात्व स्त्रात्व हे कार स्त्राय स्त्र स्वयस्त्र । स्त्रात्व स्त्राप्त व स्त्राप्त स्त्र स्वयस्त्र स्त्राप्त स्त्र स्त्राप्त स्त्र स्त्राप्त स्त्र स्त्राप्त स्त्र स्त्र स्त्राप्त स्त्र स

हिन्दी-पद्य-रत्नावर्टी

85



४८ हिन्दी-पच-रत्नावली

रहिसन बीचन संग्र विम, लगत कलंक न काहि। दूध कलारी कर गढ़े, मद समुके सब ताहि हं ५६। रहिमन पानी रासिए, वितु पानी मय सून । पानी गये न ऊवरें, मोती, मानुष, चून । १५॥ रहिमन ब्याह विद्याधि है, सक्दु ती जाहु प्रयाय। पाँचन येही परत है, होल बजाय-धजाय १५८६ रहिमन बहु भेषज करत, व्याधि न छाँइत साथ । मात स्य बसन करोग बन, हरि कनाम के नाथ ॥५९॥ रहिमन यात चगन्य की, कहन मुनन की नाहिं। जे जानत से कहत नहिं, कहत ते जानत नाहि ॥६०॥ रहिमन राज सराहिए, ससि सम सुखद जो होय। कहा बापुरो भानु है. तच्यी सरैयन खाय ॥६१॥ रहिमम रिम का छाँ हि कै करा गरीघी भेस। मीठी योगो, ने चन्दी, सर्व तुम्हारी वेस १६२६ रहिमन लाग भला करी, चगुनी-चगुन न जाय। शरा सुनत वय वियत है साव सहच बहि स्वाय ॥६३॥ राहमन विचा अदि नहि नहीं बरम तस हान। संपर तरम त्या वरै, पस् ।वनु पछ वि<mark>पान ॥६४॥</mark> रहिमल न नरभ र चके व कट सागल आहिं। इनत पार । व नर ११न गुर्च । वक्तान जाहि ।। १५॥ नम न गा। प्यन नक नीत्र त नवस माय। संरोल सेवा त्रं के केट्स नसं॥३६॥ नम् ।म । स्था नदा नद् । य म दानि । ं । विके । , नक्त शानि गरिजी



हिन्दी-पद्म-रत्नावली

45

सोरहा

रहिमन मोहिन सुद्धाय, श्वमी पियावन मान पिन। जो विष देय जुलाय, प्रेमसहित मरियो भलो प्रेटी (रहिपन के टीर्रे)

११---राज्य-श्री-निन्दा

[केरावरास-म० १६०४--१६६]

यज्ञिका शुन्द

एक काल राम देव, सोधु बंधु करत सेव।

सोभिजें सर्वे सो और, मंत्रि जित्र ठीर-ठीर ॥ १ ॥ बानरेम यथनाय, लंबनाय-यंप साथ,

४, लंकनाथ-वंपु साथ. सोभिजें सबै ममीप, टेम-टेम के महीप ॥ २॥

ोहा मरस स्वरूप पिलोकि के, उपजी मदनहि लाग। स्वाइ गये नाही समय 'केश्च' छपि ग्रापिराज ॥ ३॥

व्यक्तिन, व्यक्तिः भूगु, अंशिमः, कर्यपः वेशव व्यासः । विश्वामित्रः, व्यान्त्ययुनः क्तन्सीकिः, दुवानः ॥ ४॥ वामदेव युनि कावयुनः भगद्वातः मनिनिष्ठः । पर्वनातिः वै सकतः युनि व्यक्तिः सदिनः वरिष्ठः॥ ५ ॥

नगणगणिको छुन्। समय गसबन्द्रज्ञ उठे विलोकि कै तर्व



६न्दी-पद्य-रत्नावली

43 नोमर छंड

.

सम — सुनि ज्ञान मानसन्दंस, जप जोग जाग प्रशंम । जगमांक है दुब्द-जाल, सुख है कहां इदिकाल ॥ १२ सहँ राज है दुल-मुछ, सब पाप के। अनुकूछ।

श्रव साहि ले ऋपिराय, कहि कीन नरफहि जाय ॥ ११ चौपाई

सोदर मजिन के ज चरित्र। इनके इस पै सुनि सरा मित्र

इनहीं लगे राज के काज। उनहीं वें सथ होत काकात राज भार नर भैयनि इया । इल बल छीनि सबै तिन स्या जध लीन्हों सब राज विधारि। नल-इसयसी दियों निकारि राजा सुरधराज की गाथ। मोंपी सब सबिन के हाथ सक्षत सुराबा-रीन विचारि। सबिन राजा वियो निकारि राजन्श्री ऋति चचल नाता तार का सूनि लीज बाह यौवन धार प्रशिवेशी स्ता। विनश्यी को न राज-श्रीसग शास्त्र सुजलहु र अवन नान । मल्टन होन ऋति नाके गाउ यधि है अति इत्तर हाय । तहिष सजति रागम की सुष्टि महापुरुष स्वा अस्त भीति । हरति स्वा कास्त साहत शिव र्वपत्र सर्गाचकाल हा बाल अन्द्राहारत हारिकी होति गुर के यथन असड अनुस्टा सुन्य हान स्वतन की सु^द मैंत' यस्ति नव यसन र्उटा । विदेश नहीं तस स्था उपहेंगी भित्रत ह का मना न वान । श्रांतशन्त्रक ब्यो उत्तर देवि पहिल सुनै 🔳 भाग नुजान । मानी कारणी ज्यो न गनि



दिन्दी-पध-रत्नावटी वचपि पुरुपोत्तम की नारि। तदपिभव्छस्रछजन चनुहारि॥ दिनकारिन की श्रान देपिणी। बहित लोग की श्रान्वेपिणी ! मन-मृग के। गुविषक की गीति । विषय-वेळि के। वारिव-रीति ॥

**

सद-निशाबिका की भी अली। सोह-सोंद की शप्या मठी॥ चारोविय वापनि की वरी। गुणुन्मन पुरुषन-कारम छुरी। फल इमन के। भेषावली। कपट-मृत्य-कारी की शाली॥

बाम काम-करि की किथीं कोमल करलि सुवेश । धीर-धम-क्रिजरात्र की, मना गृह की देखा।१६॥

चीकाई

भूम्य-समी भा मीने रहे। यात वृताय तकन्द्री कहें।। यस्थ-वर्ग पश्चिमी नहां। माना समियात है गहीं।। मर्रा सब र गान न याथ । इसा हाट व्यक्ति करि जनुक्रीय 🛢 राज-विदास-पारत धानुनी परशास समने धानुनी ॥ सुगरा वह शुरुना वर्ग तथा सुगर्सन घाय माँ परी ॥ ना इर चिनते यह दया। तान इटि ना वदीये मया।। प्रमान राजा इ करिन राज हांच बारी ने बाद मनमान ।। स इंट मा चयम हुई स्वयं की मी प्रार्थ हुई।।

1 21 नाइ क्षति 'दन का कहै भ इ परम क्षमित्र

सम्बन्धाः तन्त्रय सन्त सदी विश्व भग्ना m2 12 19

ध्यों ध्यां रांग नाव सात तुम सव जानत ही ऋषिरात ! रेमा रित्र मुरान मानिय । तैसी राज्य का जानिय ॥



हिन्दी-पश्च-रत्नावर्ला

47

सेम, महेस, मनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गार्ने। जाहि अनादि, अनंत, अगंड, अहेद, अभेद, मुदेद बतार्दे॥ नारद से सुक न्यास रटें पचि हारे तक पुनि पार न पार्चे। साहि बहीर की छोहरियाँ हाहिया मरि हाल पै नाच नचार्ने ॥॥

धूरभरे व्यति सोभित स्वामजू तैसी वर्ना सिर मुन्दर घोटी। रोजत स्नात फिर्रे घाँगना, पर पैजनी बाजती, पारी कहोटी।)

वा छवि का रसरगानि विलोकत वारन काम कलानिधि काटी। काग के भाग कहा कहिए हरि-हाथ सें। लै गयो जारान रीटी ॥५॥ 1.95 ष्ट्रीपटि श्री गनिका गज मीध अजामिल सी कियो सा न निद्वारी है

गौतम-गेहिनी कैसे तरी, प्रहलाद के कैसे हरूयो दुख भारों। काहे को सीच करें वसन्यानि, कहा करिट्टै रिव नंद' विचारी। कीन की सक परी है जु माखन-चाळनहारों है राखनहारों ॥६॥

(लुप्ताव समन्तार)

१३-भक्त-भावना

[सनायति-स० १६४४-१०००] इतिस

महामोह प्रदिन में, अगन-अक्टीन में, दिन दुख-उदनि में जान हैं विहास कै।

मुख का न लेम है, कर्नम सब भातिन को. मेनापनि याही ने कहन ऋकुराय कै ॥

र मुर्बे के पुत्र समा



११-सुंदर-विचार ४ [गुनर-नः १६४३-१७४६]

कवित

काटू सों न रोप तोप, काटू मों न राग देप, काटू सों न बेर आव, काटू मों न यात है। काटू सों न बुक्साद, काटू सों नहीं दियाद,

काह सों न संग, न सी काह पण्डपास है। काह सों न संग, न सी काह पण्डपास है।

मझ को विचार, कट्ट और न सुदान है। मुक्तर कटन माई ईमन का मदाईम, माई गुरुटेंग जाड़े दूसरी न बान है॥१॥

्% पांच गांच रते रससाति र तपन केक, हथ गय गांचत, पुरत पहाँ वस्त है। बाचन जुलाक संस्ताद (संच ग्रंग पृति

सुनर्गार के बार्ड निर्माण के कि है।। सुनर्गार कायर की जिल्ला करणाहि सही, सरकात बार्डी जिल्ला करणाहि सही, सारसार काल परता सुद्धाल है।

रम जुद्रम प्राद्रश सम्बद्ध सम्बद्ध सेहि. ार महि सरमा रहादन सक्क है।। २३

र द का मनेता भीन विद्युपन नहीं प्राप्त, भीन विनु पाति नैसे जीवन न लिटिये।

ाणान्ति ये नान का एना, ना सावशत सा विजना-मुन्नगा**है।**



दिगी-यच-तनावली -

नुक मेन, वंद-मेन, धरध मित्रै न कप्नु, सुंदर कहत ऐसी बानी सर्पी कदिए १५३

पृत्ति कैमा धन आके, सृति को संसार-सुन्य, सृति तेसा आग देखी, जंन कैमी यारी है। बार तैसी व्यालाई, स्थार तीसा सनसाय,

बाव तथा चनुताह. स्थाप असा सनमान, बनाई विराद्धित तैसी, नामिनी सी माने हैं ॥ बात्ति तैसी हरणाय, विज्ञ तैसी विचित्रीक,

बार्गन कर्मक जैसी, सिद्धि मी अगारि है। बासना न बाद बादी, वेसी समिता गाणी, सन्दर्भ करण नाहि बंदना अगारि है 1%

्ष्ट्र ज्ञान में फाइक विद्यागया है सामवदि, ज्ञान रेजा है साह साम ज्ञान है

वान किया है साह कान अवसुद्धे। वह निकास के दूर भी का यूर्य है साह रुगुल कारक लाग लाग व बहुसुद्धे ह

राज्य करण का राज्य के बहुताबक वाजू है व का करण का ११ जर प्रश्निक सहस्रु है व का

rê.

्राण्याच्या च्या १८ १४ ४४ ४४ १८ व्योध क्ष्माचा १ जान अभग्न १ ४४ व्या १९८० । इत्याचन क्षाप्ताक क्ष्माच्या ४ १४ व्याच्या १८८० । स्वाचना समावाधीय क्षाप्ताक क्षापा स्वाची १९८० ।

ê-

14



Ęą

चपर घरत हरि के परन चाठ दीठ पट जाति। हरे बांम की बांसुरी इन्द्र-धनुष सी होति॥९॥ या अनुरागी चित्र की गति समुक्ते नहिं काय। क्यों-ज्यों हुवै स्थाम रॅंग, स्यों-त्यों चझल होय ॥१०॥ कहा भयो जा बीछुरे, मी मन तो मन साथ। उदी जाति किनट् सूदी, तक चदायक-श्या ! !!! कहलाने एकत बसत अहि-अयूर, मृग-बाध। जगत नपायन मा किया दीरच दाय निदाय ! १२ ! मतिन भृद्ग पंटावणी, महन दान मधु नीर। मन्द-सन्न ज्यावतः चल्यां कुंजर-कुन्त्र-समीर ॥ १३ ॥ दुमह दुराज प्रजानि से। क्यों न बढ़े श्रांत इंद । व्यापिक भौरेगे जग करें मिलि मातम रिव चन्त्र ।। १४ 🛭 **१**.हैं यह सब काति समाति, यह संयाने लोग। न स दवायन निमक ही, पात्र राजा, रोग ॥ १५॥ सबै रेमन करनार है नागरन क नांव। रयां राज वात का अब उस राजार गाँच ॥ १६ 🗷 राज्यो स्टब्स स्टब्स श्राप्त माना। रत राज्य न उवादप नट नोहन विस्तार रही क क अर लड़नार हा । वाह कार जाड़। 'त' नार' ह जा तता उचा हाइब /८ ॥ इ.र.च्या अस्ता १० चा । गुगव के सूत्र। हैं बन्ध बयन्त पर् इन डारिन में फूट है १५ है •तर ^{*} २०१ र भीगना सावक्ता वाधिकायः। रा भार और न हैं, या पाये श्रीराय 8 २० 8

. 12 ** . *10 1 24

का छुट्यो इदि जाल परि, कत कुरङ्ग श्रकुलात। ज्यों-ज्यों सुर्गित मज्यो चहत्त.त्यों-त्यों उर्गत जात॥२१॥ कर लै सुँधि सग्रहि कै, रहे सबै गहि मीन। गन्धी, गन्ध गुलाय के गेंबई गाहक कीन ॥ २२ ॥ वैन यहां नागर बंद, जिन श्रादर नो श्राव। फुल्यो श्रमफुल्यो भयो, गेंबई गाँव गुलाव ४ २३ 🗈 जद्पि पुराने बक नऊ, सरवर निपट कुचाल। नयं भये तो यह भया, ए मनहरन मराल ॥ २४॥ दिन इस चाहर पाय के करिले आप परवान। जीलीं काम सराधन्यस, वीटों वो सनमान ॥ २५॥ मरन प्याम पिजरा परगे सुवा समय के फेर। च्यादर दे-दे पालियत यायम यनि की बेर ॥ २६ ॥ चले जाट हाँ को करत हाथिन के व्योपार। सिंह जानन, या पुर यमत धार्या खौर कुन्हार ॥ २३ ॥ सम्बद्धी संदर सर्थ, सप-शहर न कीय। सन की रुचि जेती जिते, तिव तेती रुचि होय ॥ २८ ॥ जगत जनायों जेहि समय मी हरि जान्यों नहीं । इपें को सिन सब देशिये. कोसि न देखी जाति ॥ २५ ॥ अपसाटा हापा नियक सर्वेन एकी कास। मन काँचे नाये ह्या, साँचे संये सम ॥ ३०। हौ स्री या मन-सदन में हरि व्यर्वे किहि बाट। पिकट जरे औं लगि। निषट मुर्जे न बपट-बपाट 🗈 ३१ 🛭 यह दिरिया नहिं और भी, मू करिया वह सोधि। पाइन-नाद पदाय जिन बीन्दे पार परोधि ॥ ३२ ॥

हिन्दी-पद्य-रत्नावर्खा £X भजन इस्से तासीं भज्यो, मध्यो न एकी पार।

दूर अजन जासी कही सी तु अज्यो गेंबार ॥ ३३ ॥ पतवारी-माला वकरि, और न जान स्पाय। नि संमार-पयाधि कों, हरि-नामें करि नाव ॥ ३४ ॥ म्त, मोइन सों मोह करि, तु धनस्याम निहारि।

के जिल्हारी मा जिहरि, गिरिधारी उर धारि ॥ १४ । दीरप मांस न लेड दुरा, सुन्य मार्ड नार्ट मुख। दर्श-दर्श क्यां कात है, दर्श-पर्श गुक्रवृत्ते ॥ ३६ ॥

नोकी उद्दे चनाकर्ता, फीकी परी <u>ग</u>हारि। मनो नभ्या भागन विरन, थारक बारन नारि ॥ ३० ॥ वंदिष्टे गुन रोमले, विमराई वह बानि।

नुसर कान्द्र भय सना चा र-काव्य के वानि । ३८ । ह्य का दरन रीम इ. राज न हुग्या महाय। मुख्यात प्रत्यो पर, स्थाप पर, साथ के पर-पास है ३४ है

हाड हाटिक संबंदे हाउ शक्त हतार। मा संवति । रहाति संदर्भवप । प्रदारनगर । ४० व या देश का राज्या हा राग प्रवर्ती बाल ।

रड ल कर्रें चर्ला केरटर रेस सावसे स्वाट ॥ वर ब र १, ४८९ - जुल्या । इ. अन् १ धार हतार at wide of a ser office streams

The second of the set that the second is the fi त्र - रहं हे न्यू से हर- कि आरा है

. 1 01

सोटि गुर्दे बाही बटम, का जीनै जहुराज। अपने स्थयने विगद की बुहुँन निवाहन लाज ॥४४॥

१६—इत्रपनि शियाजी [१९७-१८ १९७८-१९०६]

विन १२५ जिसि जंभ पर,बार्वसुणंश पर,

रावन कार्यम पर क्युक्तनाज है। पीन बारियाह पर, शंगु विनाह पर.

ान बारियाद घर, संशु रितेगाह घर, एवा सहस्त्रवाह घर राम दिल्लाल है।।

दावा पृश्वदेश घर, श्रीक्षा शृग मृत्यस घर, भूषक विद्युव्य घर शिक्ष शृगक्त वर, केला सकलोग हुए सुन्दर्भ विद्युव्य स्थापन

नेता स्थ-लंबा पर, याता विधि प्रसे पर, त्योकारिता न्देशपर नेर सिवना और साह स

कान सभी १८ ज देशक मेरन सुदरत की। संपान निर्माह के दियों निर्मान है।

रायात ताहर का हिया ताकत है। नाहि के शपून विवक्तान के काल या. विक का क्यार्थ से संबंध जायकत हैं।

ক সাম স্কুল ক্রেই এই বাহারণে টার্লালীক চেন্দ্র এবর কু কোনাল হা এইবল্লা জর্ম বহুন ই কালাই এব নার কুলে ভুন সংযোগ মান, হুবলী হায় বুলোই লগহুন কুলেবালফ বিহুন भूपन जहान हिन्हुआन के उबारिये कें।, े तुरकान मारिये कें। बीर बटकन है। माहिन सो हरिये की चरचा चहाति जानि, मरनाक के हमन उड़ाह झलकन है।। २।।

सरवाक के दगन बढ़ाह खलकन है ॥ २॥ ५६ राजी हिन्दुकानी, हिन्दुकान के निलक राज्यों,

सानी हिन्दुवानी, हिन्दुवान के निरुक्त सान्यों, सम्मति पुरान नालं बहिष्टि मुनी में । रास्त्रों राष्ट्रणी सामानी राखी सानन की, परामें प्रसा पारणों, राखी राजनी में। भूज सुकति जीति हव स्टब्हन की, देम-देम कीरति बन्यानी तत्र सुनी में। माति के सप्ता निवस्ता समस्त नेते, जिसीहन दार्थिक दिवास नार्यान्ती में।

डिकी दल दासिके दियाल गानी दुनी में ॥ ३ ०% वट मध्य विदिन, पुरान गाने सागयून,

राम नाम रा स श्रांत राजना सुदर में । रिन्द्रन की चोटी, रोटी राग्यी है स्वपालन की, को में से जनन राज्यों, साटा राग्यी पर में ।। सा'र राज्य दूसन, सरोहि राग्ये पानवाड़,

मा' र शस्त्र भूरते, मरादि राज्य पानमाह, भीगो पीमि राज्य, बरवान राज्यो कर में । र रन की हह राखा नेमन्त्रः, मिवरान, देख राज्य देखठ, स्वयम राज्यो पर में ॥ ४ ॥

कम नानी संबद्धात परता चौत्तातरहा अवचारा सामा है।

पान का गोर्ड-, जीवा सम्बद्धिक पान कर ज

साजि चतुरंग चीर-रंग में तुरंग चिहु,
सरजा सियाजी जींग जीतन चलत है।
भूपन भनत नाद चिहुद नगारन चें,
नदी नदमद गठवरन के रूतन है।
ऐल-पैल कील-भैल सालक में गढ़नील,
याजन की ठेड-पेल कील दसदत है।
तारा से मरनि पुरिन्धारा में त्यान जिसि,
याज पर पारा पारावार की स्टल है। सा

શાના પદ પાના <u>પાનવ</u>

चित्त धार्यम, छाँगू छमयत सैन, देखि, बीदी कर बेन, मियाँ ! कवियत बारिनी १

भूषन भागत थूने, आवे दश्कार है, येपत साम्यार वसी क्षेत्रार सन लाहितै "

सीनी ध्रयभवतः प्रशीनी जायो देहरादः दीनी भयो रुप च सिनीत याणै पारितैः

सिना कार्या क्या स्थाप या सार्वात सिनाची पश्चिम मानि गये हो सुरदायः सुद् जानियस एक्स्टिन केम्सुसा विस्तादिस । दा

मार्थः वरि पातमार्थः राज्यस्तरः प्रभागं क्रिस्त

नव बीच्यो आप वे (वी हवा क्या का दे हर विरोध कहा नेव्यो विचाय का कारताही क्या विचेताको विभाग कार्यापा नेवा कार बी द

कि कि केंद्र दिश्योग क्षाप्राप्त काम काप की है। काला के केवाई, उनका और अपने क्षाप्त मु

्रशास्त्रकत्ता कार्या कर्णा कर्णा कर्णा कर्णा है। हर्ण र

there is no a second

१८ हिन्दी-पद्य-रक्षावती इप्टोन सिवामी मयो अध्वती हमामैगारे

दृष्टरें। सिवामी समी मुख्यिनी इमामैनारे दिली दुन्हिनि सर्व सहर सिवारे की ॥ ५ ॥

्राः इन्द्र नित्र हेरनिश्चत यत-इन्द्र त्रारः, इन्द्र को अनुत्र हेरे हुग्रधि-नदीश का।

भूपन मनन मुश्मीरना का हैस हैं?, विधि हैं? हंस का, चकोर रजनीम का व साहि नमें मिनगण, करनी करी है मैं जु,

साहि नमें भिवसक, बरनी करी है से जी, होत है कर्यकों देव केटियों तेंगीस की । पापन न हर नेरे जस में हिराब निक, गिरिको निर्मान हैरै, विस्ताविसिस के (काटी)

्धः जमन क शत या जन्द्रम सहि वैद्रो कोऽयः, इन्द्र व्यर्थः साथ जसी वीदेशः को परजा।

स्थल सम्बन्धाः वा स्थानं ग्रामीः, 'तन हा पुत्र दक्षि सकत्व सम्बन्धाः।

राज्य कर मूर्य काल्य लक्ष्य लगा। । स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान । ।

च र'म के स्थार स्थापन के क्या कर हो।। है। र'क है। के स्थापन के स्थापन कर हो।। है।

कर्रात्म र ता कर्या वर्ष द्वारा समझ वारा ना र व जा नर्यकर चीर वा सामक क्रमा समझी



हिन्दी-पद्य गतनावली पंजन पेलि मिळिच्छ मन्यो सब सोई बच्यौ जेहि दीन है मास्यो सौ रंग है सिवराज बठां, जेहि नौरँग में रॅगएक नरास्यी ॥१४

150

यों कवि भूषन भाषन है, इक वी पहिले कलि ठाल की सैडी ता पर हिंदुन की सब शहन नौरेंग साह करी धान मैठी साहि-तमें भित्र के हर सों सुरको गहि बारिधि की गति पैली बेद-पुरानन की चरचा, करचा दिज देवन की फिरि फैसी वर्ष

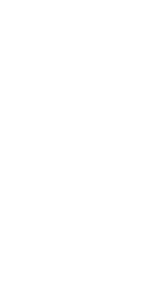
दीन दयाल, दुनी-प्रतिपालक, जे करता निरम्लेग्झ मही के भूपन भूपर उद्धरिया सुने थार जिले गन ते सवजी के या कलि मे व्यवतार लिया, तर नेई सुभाय सिवाजी पती के श्राय धर्यो हिन ने नर ऋष, पै काल करे सिसरे हिर ही के सर्द

तो घर मी दिनि छ। जन दान है बानह मेर पानि ना घर छात्रै

में ही शुनी की बड़ाई सज़ी श्वक नेती श्रदाई शुनी सब साजै भूपन तार्ष्टि मा राज विराजन, राज सी नू सिवराज विराज तो बन मों गढ़ कोट गर्न बार नु गड़ काटस के बल गाति ॥१४ एक कहें संतपहुम है इसि पुरत है सब की चित पाई

एक कहै अवतार मनीत की. यो तन में अति सुरद्रता है नुषम एक करें मांह इन्द्र थों, राज विराजन थाड़ये। महा दे एक वही नगीसट है सगा गढ़ कहीं नगिसह सिवा है ॥१८







दोश चक्रवतिन के चिन्ह सब, जंगन-जंगन रासि । इत्र-धर्म जब जीतरपी, सामुद्रिक दें साथि ॥ रे ॥

12

ईम सरान अनुरूप बार जारवान परिनाम। पनमन्पत्र नामे जिस्सी, अप्रमान्य बार नाम। १५॥ भोषाः

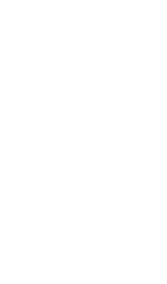
प्राप्त पानमी में 214 215 नुवान साहन क्यान कार्ड । पुदुरान बकत पंपूक वार्ड । मिनन मुनल इस दिया कार्डे गाहि पनका को पानी बाते । किलाईक र क्यानीत दुवि चौते बहित्रन उठन नार्ड हो गाँ। । नारमान काल दिये चतुरानी केला नेन मिन्टीना आहा । यावन किलाक द्वार के पार्च इसि सा नकत नुरमा जार्ड । विशेष नेन भूतरा सदा के दिन-दिन बढ़े पाड चनारा। तैसे माइक पहल को चना

सामुद्धिक उठ 'पद्मा है, जिसके द्वारा शालीक पर के विक्सी '

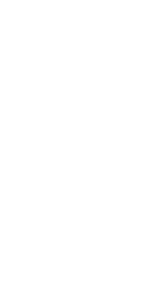












नेह्य मृष गुरु तिय श्रमल, मध्य भाग जग माहि i है विनास ऋति निकट तें, दूर रहे फछ नाहिँ गंदेश भने-पुरे सब एकसे जौठी बोछन नाहि। जानि परत हैं काक-पिक ऋतु बसंत के साहि ।%। दुरं लगन सिग्द के बचन, हिये दिचारी श्राप । फरुयी भेपत दिन पिये निर्ट न तन की नाप 🛚 🖽 नयना देत बनाय सब हिय को हेत छाहेत। जैसे निर्मेळ ध्यारमी भली-युरी **क**हि देन ॥६॥ फीर न हें हैं फपट मों जो की जै स्वीपार। जैसे हांडा काठ की चढ़ित न दुखी बार ॥७॥ श्रोद्धे नर की श्रीनि की दीनी रीति बनाय। जैसे छीलर, नाल जल पटत-पटत घटि जाय।'टा। विद्या धन उदान विना कहाँ जुपार्व काँन। विद्या कुळावे ना मिडी प्या वेट्स की पीत 1890 रों समीप पड़ेन के होन पड़ा हित मेल। सद ही जानते पहने हैं एक बरापर धेन (1954) पिसन-इन्योगर सुजनमी परन दिसास न पृषि। ीत दार्थी हुए की पीवत छात्रति पीकि ॥१२॥ कर युगाई समय थाँ, मैंग्ले बार्ड कोट। र्शेष किया आप हो लागवता है होई हरना काच काठ विषय कर्क कीतिर्वासक है। होत्य । शालाम दिन की करें, गीर बीर की शीय हरत परत परत प्रभावती । एएएविहीत स्टाप्ट रहारी राष्ट्रा- लाद में निर्देश पर परा विसाद (११)



. 63

दीवो प्रवसर को भटो जामों मुधरै काम। स्ति सूर्य धरसिया घन का कीने काम ॥२७॥ श्रपनी पहुँच विचारि के करनव करिए दौर। तेत पाँच पमारिय जेती लाँबी सौर॥२८॥ कैसे निवह निवह जन करि सवहन मों गैर। जैसे वसि सागर विषे करन मगर मों बैर ॥२९॥ जोही से बहु पाइये करिये ताकी जाम। रीत सरवर पं गयं कैमं बुभति पियास ॥३०॥ श्चति परचे ते होत है अरुचि श्रनादर भाय। मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय ॥३१॥ रस अनरम समुगीन कछ पदे प्रेम की गाथ। बीहर मंत्र न जानहीं सौंप पिटारे हाथ ॥३२॥ जो पार्व चिति उच पद साको पतन निहान। थ्यों तपि-तपि मध्यान्ह लों धन्त होत है भात ॥३३॥ बहुत निवल मिलि बल करें करें जु चाहें सीय। तिम्बन की उसरी करी, करी -निवंधन होय ॥३५॥ बारज धीरे होत है, काहे होतु अधीर ? समय पाय नमवर पात, केतक सीचीं नीर ॥१५॥ जे चेतन से क्यों तजे जाको जासी मोह। न्धिक के बीछे लायों फिरत अनेवन लोह ॥३६॥ मुरस्य गुन समगै, नहीं तीन गुनी में चुका कता पट्या हन की विभी, देखें जी ल ब्लुक । ३०। जबा धेले होतु है सुग्य संपति को नाम। राज भाज नल ते एउयो, पांडव विय धनदास १३८१ १ शयी

बिरद-पीर-स्वापुष्य अये आयो जीतम गेहा त्रैमे आवन भाग ते आग लगे पर भेट् वर्रा कछ कति नीचन देक्ति, अटीन बाही संग। पाधर कार कांच में उद्धरि विमारी चाहा ॥४०३ क्षमानयहरा लीने रहें, खल की कहा बनाय। चारित परी त्न गोहन थन चापहि ने सुभि जाय ॥४१॥ चारि तर के पेट से रहे न मोटी बात । भवार सेर के पात्र से कैसे सेर समान ॥४२१ बचन रमन काएकप के कहे न दिन ठहरायें। बया कर पद मृत्य कछ र क निकास-निकासि द्वि आये ।४३६ सब भा कार राम है, उबहु न शरत वान। स्वा भाग गया व कर विवाद वार्त स्वाब ।।४४।)

नाकार र प्राप्त र तान र तारे स्वयं होक। 2. 12. 11181 THE ACT C PROTERTS)

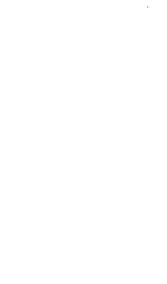
• १ - वि हास्त मार

.. 'ar siig at 1 .. . 17 207 8











हिन्दी-पद्म-गरनायली

विना विचारे जे। करें सा पाछे पश्चिमाय । काज दियारे व्यापना, जय से होति हेंसाय ॥ जग में होति हैंमाय, चिस में चैन न पारे। गान पान जनगान राग रंग मनहि न भावै।। कह गिरिधर कविराय दुःग्व कछ टरत न टारे। मदरन है जिय मार्टि, किया मा विना विवारे ॥ १२ ॥

२३-गंगा-गुग्ग्-गान

विद्यारण-नांव रवारकारवार्व |

बूरम पे काट, बाउर पे शेय-बंडली है. बंदरी ये कता केत मुक्त हजार की। कहै पत्रमाक्त न्यों कन वे कवा है मूमि, मीम पे कवा है यिकि राजन-पहार की।।

रज्ञन-पहार पर सन् सुरनारक हैं, मान् पर नानि जहा-सुद है स्वपार की।

जाति अहा-अहम वे धन की छहा है हता.

भव की इहान ये इसा है एम बार को ब रे ॥

नेम न न माध्य खड़ अफड खाल हुना, म अवता या शेह नवह न स्विही।

यहे बहमाध्य ६ वह ता वरेन्द्र ती, न्मांद्र क्षार नामा जनन्द्र गाँक जातिहाँ ह











दिन्ही-पद्म-रलावजी

98

बाँधे जहा-जूट बैठि परवत बूट मार्टि, सदा काजकूर कही कैसे के ठहरता ? पार्व नित अंगे, रहे प्रेतन के संगे गैसे पुरुतों दे। नंगे जो न गंगे सीम धरतो ॥१०३

सुध भय जे हैं नर गंगा के अन्हाइवे की कामी बदमानी भागी कैयक करोर हैं। करे परमाध्य त्यों तिनकी श्रवाहन के माचि रहे जोर सुरलोकन में मार हैं॥ बार-चार हाटसी लगाये लरीं पाट-घाट, बाट हेरें तीर में करेपीं तन बोर हैं।

एक चीर शरण, जुल्स एक चीर ठाउँ, एक भार आदिया विमान एक जार हैंस मर्रा

. 48

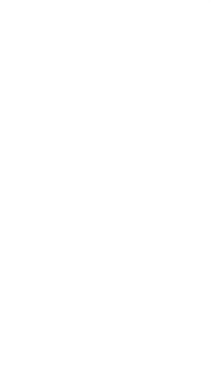
यासर न भागम, विद्यास में, संयासरमें गगः म, रम मेन नका विसराइये। कते पटनाकर पुरास पुरुष, रीरव से. है ज म कै प्लीत गैलन में गाइये ॥

बारनम, बन्द्र में, विवासे बसवायनसे, विष्याम सन्दर्भ वहा-बहा चाइये।

≢गमः म स्थान करनायाचे के लिया, उसकी सरतासमय, विष्णु^{के} सबद, बद्रान इ.र. भित्र न नहीं और इंटर न विद्याल अना, प्रत्येक देवले क्षे भ्रापने शंक संस्थान जाहता है।











हिन्दी-पच-रलावजी

भूले ज़ोबन के न मद, खरी बावरी गाम!
यह नैहर दिन दोष केंग, ज्यन्त कंत वें काम ॥
अन्त कंत वें काम, वंत सब होत है री।
जाने रीमें, नाह, नेह, नव ताते के री।।
जाने रीमें, नाह, नेह, नव ताते के री।।
जाने रीमें, नाह, नेह, नव ताते के री।।
जाने रीमंं, होते होते।
जानि रियमोह, सनेह साजि, अस्ति देह न भूने ॥११।

(धोधी)

82

पूरे मेर पोषिया, तोमी भाषन दिरि।
पेमी भोती पोष है, सैजी होय न फेरि ॥
भैजी होय न फेरि, चीर यहिनीर न आये।
मायुन लाड कियारि मैंन जाने छुटि जाये
सायुन लाड कियारि महिना हुटि जाये
होने दीनदयाल, रग चडिट चहुँ पेरं।
जो न हैंहै भोग, अले जल फतन होरं।।

(%44)

द्वारा है है कहा कहिल चार्यक तुस साहि। याका नीके गरिका तुस्कित कीतिल साहि। दुस्कित कीतिल शहि. हीतिल स्म धरि कार्ग । सम्म अवतं हेल सबै इस सीरक स्थार्ग । सम्म होल्ह्याल श्रीस को पैता त्यारा ।। साहत के यो सिल्ह तुस को बहातितारा ।।।?

कोइसी ।

संग्रं केंग्यान तुन्नमी प्रमाकार साल सर्गकेंग्या ने त्रस्य एस्स सीन स्नामी अ



हिन्दी-पद्य-रबावली 800

के करिके कर बहु पीय की टेरत निन दिग सीहर्र। के पूजन के उपचार लै चड़िन मिलन मन मोहई हैं।

-42 थै पिय-पर उपमान जानि एहि निज उर धारत।

कै मुख करि वह धंगन मिसि अस्तुति उचारत्॥ के ब्रज्ज तिय-गन-धर्म-कमल की महाकत मार्छ। के अज-हरि-पद-परस-हेत कमला बहु धाई। के मालिक अरु अनुराग दों व प्रजन्मंडल बगरे फिरता।

के जानि लग्छमी-भीन एहि करि सतथानिजजज घरत ।श्री ځۍ

निम प जेडि छिन चय-जोति राजा-तिसि पात्रति ! जल में मिणि के नभ व्यवसी खी तान तनावति । होत मुकुरसय सबै नवै उरजल इक स्रोमा। नन मन नैन जुद्धात देशिय सदर सो मीभा॥ मों को करि ना छात्र कटि सरै नाछन जसना नारकी?

मिंग अवनि और श्रम्बर रहत छवि इकसी सभ नीरकी।श्री

. 42

रात प्रदेशनावस्य कह जन मधि चमकामा। अर्थ और नचन स्थित सोई मेन आया ।! र राम । ।इ. गड असन रहाया।

्रास्था । वर्षास्था हो। ८ र से स्मेर ५ १ ५ दुई र सामा जन दिस्तर तह । में पर देव हैं के पर कार्या के साम है । १९३१

कबहुँ होत सतचंद, कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत। पत्रन गवन-वस विम्बरूप जल में बहु साजत।। म्तु सिस भरि खनुराग जमुन जल लोटत डोलै। के तरंग की क्षोर हिंडोरन करति कलोलें॥ के बाल गुड़ी नम में उड़ी, सोहति इत-उत धावती। कै श्रवगाहत दोलत कोऊ श्रज-रमनी जल श्रावती ॥६॥ d.

मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल। कै तारागन ठगन छुकत प्रगटत ससि श्रविकल ॥ के कालिन्दी-नीर तरंग जिती उपजावत। नितनोंहों धरि रूप मिलन-हित तासों धावत॥ के बहुत रजत चकई चलति, के फ़ुहार-जल उच्छरत। के निसिपति-मल्ल धनेक विधि, चिं,वैठन,कमरत करत ॥॥॥

कृतत कहूँ कल हैंस, कहूं मञ्जत पारावत। कहुँ कारंडव उड़त, कहूं जल कुक्कुट धात्रत ॥ चक्रवाक फहुँ चसत, कहूं चक ध्यान लगायत। सुक पिक जल कहुँ पियत, फहुं भ्रमगवलि गावत॥ कहुँ तट पर नाचत मोर यहु, रोर विविध पच्छी करत। जलपान न्हान करि मुख-भरे तट-सोमा मध जिय धरत ॥८॥

कहूं यालुका यिमल सकल कोमल वहु छाई। नाज्वल मलकत रजत सिदीमनु मास सुद्दाई॥ पियके आगम-देत पाँवड़े मनहूँ बिद्धाये। रत-रासि करि चूर कुछ प मन् वगराय ॥

१६ न्द्रान्पश्चन्त्रतावला मनु मुक्त माँग सोथित-भरी स्याम नीर चिकुरन परिसा

सत्तान झायो के चीर में झजानियास छलि हिप इरसि 19 (अन्त्राचनी मारिका)

(२)समशान

शंध सोई मुख, सोई छदर, सोई कर पद दीय। मयो जाज कछ औरही परसत जेहि नहिं फोप ह द्दाइ. मांस. लाला. रकत, बमा, तुवा सब सीय।

क्रिज-भिन्न दुरगधमय गरे मनुष के होय हरी। वोपाई

रत बाराह जिल ल अन्हारे। निल वे बोक्त काठ बहु **डारे।** क्सर पाचा जिलको लीट त्या करत कपाल किया तिस केरी ह इस्तर न सबे पटुस्था तेर वासन छोडि सिमारे।

ना - र कार महीच हारत आज्ञाकनेहि भीत्रविचारत न त्र राज्य अर्थ भूवन नेमाय न लाख्यन मुख **एकन द्विपाये।** रायात प्रता नर्वाचम् दार। मनकाच सब एकहि लेखे। - ना कृत्य अमृत दिवसान । आहु सर्वे इक भाव विकान ।

रह देवी व हाउ अब नाही। रह नाम हो प्रस्थन माही ॥३।

मान साद पट र रस्त इटि इस्त स्वास दाव लही है।

उपादन मन कहा है।

मय-भरो नर खोपरी सो सिंस को नव विषेषु धाइ गह्यो है। है यिल जीव पस् यह मत्त हैं काल-कपालिक नाचि रह्यो है।।३॥

عي

सूर्ज धूम बिना को चिता, सोइ खंत में लें जल माहिं वहाई। बंर्लें घन तर बेठि बिहंगम, रोवत सो मनु लोग छुगाई॥ धूम खँष्यार, कपाल निसाकर, हाइ नछत्र, टहूसी टटाई। अनंद हेतु निसाचर के वह काल मसान सी सांक बनाई॥॥॥

सुच्यय

रुष्या चहुँ दिसि ररत, हरत मुनिकै नर-नारी।
पटफटाय दोड पंख डल्ल्रहु रटत पुकारी॥
प्रंथकार-यस गिरत काक प्ररूप चील्ह करत रय।
गिद्ध, परुड, हड़ गिल्ल्य भजत लखि निकट भयद दव॥
रावत सियार, गरजत नदी, न्यान भूँकि हरपावदे।
सँग दाहर-मीगुर-स्टन-धुनि मिलि स्वर तुमुल सचावदे॥
सँग दाहर-मीगुर-स्टन-धुनि मिलि स्वर तुमुल सचावदे॥
सँग दाहर-मीगुर-स्टन-धुनि मिलि स्वर तुमुल सचावदे॥
सा

(सस्य दरिश्चम्द्र नाटक)

(३) त्रेम-त्रलाप

पद

ऋहो हिर, यस, श्रव बहुत मई। श्रपमा हिमि बिलोकि करनानिधि कीने नाहि नई॥ जो हमरे दोपन को देखी, ती न निवाह हमारो। करि के नुस्त श्रजामिल, गज को हमरे करम विमारो॥

हिन्दी-पश-रत्नावती त्रव नहिं सही जानिकोठ विधि, धीर सकन नहिं पार हरीचंड को वैमि घाडके मुज मरि लेंद्र छवारी। 30

पियारं, याक्षी नांव नियाव ? तो तादि भने साहि नहि भनती कीनी भनी बनाव ह विन बहु हिथे जानि भाषनी जन दुनी दुन्त तेहि देनी। भर्जा मह यह रीति पालाई, उन्दर्श अवसुन लेनो ॥

हर्गचन यह सन्ने नियंत्या है है अंतरजामी। षारम झाँव झाँकि के दारी बनाना यम का स्तामी ॥ २

समारत चापन का विश्व सार्थ । मार मुक्ट सिर पान रच र्याट नामह चलक महारी ह हित्र हतेकल बनमार , वर सुरका नाम उनाही। बनाविका कार्य के रहार करत कार्य विवास है। . प्रमाण कर करा । क्रमा स्थान कर स्थानी । त्यस प्रत्या का कर कोस के की रूप बनवारी ! त्म मान पाम । ११६ का मत्याह । तारी ।

and their risk with the same and the . 42

11 14 . . 4 24 .

रत तैनत महररहा । रत क्य अपने काय ॥ र नवमन व रहन रह वहुत वह नव हवा आने र

to the state of the state of the state of







भूनी इमदी तुमका, तुमवी हमरी सुधि नार्ति विसारे ही। चपकारन के कछ अत नहीं, जिनहीं दिन जा विसारे ही। महराज । महा महिमा तुम्हरी समुक्ते विरले दुविवारे ही। गुम शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे ! मत-मंदिर के उतियार ही । यदि जीवन के तुम जीवन ही. उन प्रानन के हुम प्यार ही। तुमसा बनु पाय प्रनापहर्गा बिकड़ि के बाव और महारे ही ॥ २॥

(३) बुहापा

हाय बुदापा नोरं सारं अव नी इस नकन्याय शयत। करन बरन कुछ बनने नाडी, कड़ा जान भी कैस करन ॥ द्भिन सरि चटक हिने मां सदिय चम सुमानश्वन होय रिया। नैस निराजका दल पान ह हमरी अक्ति के लग्झन ॥ १ व ष्यम कुछ करा अन्त है भी ने बाजी विदेश्या आणी बान

केम्या स्थितः नार्तः चार्तः सत्य काह स्टेसारम् ॥ कहा बही इन्हर १ हरू १ समारा का है बहु हाल। भाव द्वांत का बान न सम् विभाग वाच वहरा हु रा कारा माक याक मार्ग्या गोराचन नाम मृहे श्रम पीपवान । दोरण पर वर पर आवश्य र क्या नहारव ना पहिस्त ।

कर रार एक अवि अवि मुक्त मान शास अस ह व राह के हुं रूल ने चापन करण ह चापा पुरव र साजने ।। देव वर रहेकार र पूर्व चव स्थानम् वर्षानन-व्यक्तिम् है। रात है। है है रह है भने घा धारा स्ट्रांटन विस्त्र रहन है

ंच उत्तरका । । व प्रांताओं प्रदेशकों कृत्यका सम्ब 74

जियत रहें महराज सदा जा हम ऐत्यन का पालति हैं। नाहीं तो अब कोधीं पृष्टै केहि के कीने कान के इन ॥ ४॥

(३) फुटकर पद

सायो, मनुवा खजब दिवाना।

भाया मोह जनम के ठितिया, तिन के रूप छुमाना ॥
छष्ट परपंच करत जन धृतत, हुन्न कों मुख किर माना।
किकिर तहां की निनक नहीं है, अंत समय जहें जाना॥
सुन्नते धरम-धरम मोहरावन, करम करत मन-माना।
जा साहब घट-घट की जान, तेहि वे कन्त दहाना॥
वेहि ते पृद्धत मारग घर को आपिह जीन मुलाना।
'हियां कहां सजन कर बासा,' हाय न इतनी जाना॥
यहि मसुवा के पाछे घडि के सुन्न कर स्थाना।
जो परताप राम का चीन्हें नाटे परम स्थाना।

. 48

जागी आई, जाती रात खब धीरी

काल-चार नहि करने चहत है जावन-धन की चोरों। श्रीसर चूके कि पिल्लिहाँ हाथ मीजि सिर पेतरी। फाम करा, नहि काम न निर्दे पाते केरी-केरी। जा कल वीर्ता वीत चूकी सी चिता है सुर नेतर। श्रीयों जामे बने सी कीरी, कि तनमन हुए टोरां। पोड़ का का नहि सार्थ सत दिना सुह मोरी। अपने करम बापन सना जोर मोदना मोरों। अपने करम बापन सना जोर मोदना मोरों।

....

सत्य सहायक म्वामि सुखद में लेंहु प्रीति जिय जारी। नाहि वो फिर परताप हरी कोऊ बात न पूछिहि तीरी है है है

२७-रंक-रोदन

, [नासूराम शकर शमां—राज १६१६—नर्नमान] बया शंकर प्रतिकृत काल का कांत न होगा ? क्या संगल से सेल मृत्युपर्यन्त ने होगा ? क्या अनुभूत दरित्र-तु.स अव क्र स होगा ? बबा बाहक दुर्देव-कीय कपूर न होगा? १ व होकर सालामाल पिना से साम किया था ! मैंन उनके साथ न घर का काम किया था। विदा का भरपूर ऋतन न्यभ्यास किया या। पर क्रीरों की माँति न कुछ भी पास किया या ॥ २ ॥ प्रथम की दिनगत कमान चढी रहती थी। यश के शिर पर वर्ण चपाधि सदी रहती थी।। त्रान मान की न्योति अन्यड जमी रहती थी ' भागमंगी की भीड सड़ैब लगी रहती यी !! ३ ह र्नात्रन का कछ प्रथ्य पिताली पाय चुके थे। हर पूर सब काम क्लोन क्हाय लुके थे। महर स्था महाने विश्वास विसाद चहे थे। उन सब उनका अन अनुता निक्षार चुके थे ॥ ४ ९

ा- १९२ पदा को जीक स्वाह साहब के आहा से विचर्त परे अंग्रेटी के जाए जेसे प्राप्त शीलक पर स्थित केरण

बौँघ बाप की पाग बना मुखिया धर का मैं। केवल परमाधार रहा कुनवे भर का मैं॥ सुख से पहिली भाँति निरंकुरा रहना था में।' क्या करता है कौन, न हुद्ध भी कहता या में ॥ ५ ॥ . जिनका संचित कोरा खिलाया-खावा मैंने। करके उनकी होड़ न द्रव्य कमाया मैंने ॥ खट रहे थे छोग, न द्वर पहचाना मैंने। ्रघाटे का परिलाम कठार न जाना मैंने व ह ।। विगई चोकर चोर्र पुरानेंद्र वार्न विगाशी। दिया दिवाला काट, बनी दुकान विगाड़ी 1 आये दाम चुकाय बड़ों की यात विगाड़ी। · सुमः से किया त्रिगाइ, न ऋपनी घात विगादी 🕻 ७ ॥ घट्के डिगरीदार, किसी ने दाम न छोडे। छीन क्षिये घन-घाम-प्राम, जाराम न छोड़े ॥ हाय ! किसी के पास विभूपण-बख न छोड़े। नाम रहा निरुपाधि, पुटिसे ने राख न होड़े 🛭 ८ 🗈 न्यायालय में जाय दुखि कहाय चुका हूँ। मव देकर 'इनसालबेंट'' पद पाव चारा है ह प्रपन घर की आप विभवि उदाय एका है। सर्वनारा से हाय न पिट छुड़ाय चुका है । ९ । र्षेट रहे मुख मोड़ पुराने आनेबाड़। लैते नहीं प्रयाम एट कर सानेवार 🛭 देने हैं दुर्बाट बडाई करनेशी (लड़ने हैं जिस बार न्यारं पर सरनेपाने है रहता

६ दिस्पत्रिया अञ्चलकारायः हे

दिन्दी पग-रत्नावजी

के दिना पेती लंगान अपन 'म-कवि' कहते हैं। वा ' न दिश विकाल-गमन का भी। करने हैं।।

प्रमाहित्य भीत नहीं सुरक्षत बहुते हैं।

मुक्त पर मध काराज धना-निर्धात बहते हैं हरा है बन दिना कित्यात विरय निष्यीत कुछा है।

मन वरा । नर्गं अ महा चर्नात्र हुवाहै। क्रमानी का बार वड़ी, रस संग हुन्याहै।

ही रत का बात दान विधाना ' नेसे हमा है 4 12 8 र'नमा का धाकार प्रयोध इनोंक मुकाहै।

mias er anteretation deid dat g & ११९ का । र नाच निर्मास काष मुशहे।

a a a a em ama tame mark atal

' अ अ अ अ अ अ अ अ अ के . ११ क अन मना मना स्ति है।







हिन्दी-पद्य-रत्नावली राम-सभाको, मेनाकी, गावी में भी गति पाती है। रलाया की लोलुपता सबकें। ऋपनी चाह सिखाती हैं।

188

कर-कर प्रिय बर्तांव परस्पर प्रसन्नता सब पाते हैं। जैसे मुखित दोस्तते वैसे सचमुच ही हो जाते हैं। ४। किन्तु मृदुल गुणमय कौराल यह सुखद बन्हे यदि होता है। तनके तरके मध्य मूर्याता का अंतुर भी बोता है a क्योंकि प्रशंशाकी इच्छा जब ऋधिक प्रवल हो जाती है।

मनुष्य के भीतरी विचारों में निर्यलता छाता है । ५ ६ (दासल्य) व्यस्य प्रकृति के छोगो। पर मेरा विद्यार अब जाता है।

जहां भियु-वर-मालिशित 'हालैयह' दश द्ववि छाता है ॥ भीमी बहुना नहर, तराई पाले पुष्पा से छाई। विलो' न दम व नार, पाल-गामिन ' नावा की सुपराई व है है

असं भीड स दार. सनयुन भूतल रूप लीभाषारी। मृष्टि एक नृतनः जा उस्म सनुज-शांकनं उद्वारी ।। या जब औं की शूमि निरनर जल-। बाब को सहती हैं। बार बार लोगों की अमर्जा चोर हजानी रहती है में अ

ाराम की गढ प्रकृति सभी दश्म प्रश्चित्र न करती हैं। रयम स पर दृश्य-गभ की श्राध्य नाया जन वस्ती हैं। ार तथा" प्रति सक्स =ि स ाह क्षण-छः स्थाना है।

-त-चना का भी कट-विक्य : नाबुखा नाता है। ८ ^व भवन का सगहन उस नार जातवना सारी है

पन तम **सम** है को धनहण सान सौरीहै।।







१६२ (६-दी-पर्ध-रलावळी

रसमय बचरों से नाय ! जो सर्वदा ही सम-सटन बहाता स्वर्ग-मंत्राहिनी यो । भूति पुट टपकाना सूद् जो या सुषा की,

बह नव स्वीत न्यारी संजुता को कहा है ? ! ६ श्वकुर-जलज का है जो समुकुष्टरार्गः अब परम निराशान्याधिनी का विनासी !

मत्र-त्रत-विद्दर्भा के दुन्द का माद-दाता, वह दिनकर-शोभी साम-धाता कहाँ है ?॥ व

मुख पर जिलके है मीन्यता राज्या सी, अनुपम जिलका हुंशीय सीजन्य पानी।

कानुषस जिसका हं शीव सीजन्य पाना। पर-कृष्य स्टब्प के है जा अमुद्रिय होता, सर स्टब्प्ले का स्टब्प्ल साला कहां है? ॥ ५

वह सम्अपने का स्वरुद्ध माता कहाँ है ? ३ ६ वह निमंत्र निमना का समार्थाण जो था,

नित्र मुख्य तृति से है तो चसे ध्यमकारी। ८ सफर १ तससे है कामिसी-तस्य मेगा,

वह माचका विज्ञा का विशेश कहा है ^{9 है °} नहका विक्रम में कष्ट्र श्री सकते की। वह यातन कहाक पुत्र क निर्मेश की।

• ६ मूजन मिटा है जा मूज यज्ञ-द्वारा प्रथमम वर महा बच्चा प्यारा कहा है ३ ॥१०॥

भारत करता ना सभा का भारतकान्याः कटर्व करमा था जा व्यापाना बनी में।

बन्दरन करना या जा न्यांना बानी में। मृष्ट्यांन पिकनी या बाहिका या बनाता. यह वर्शवीच वहां का विद्याला कहा है? क्रिके



३२-- तुलसी-पंचक

नगणवराम 'रमावर'-सं॰ १६२३ नतंपान }

एक्य

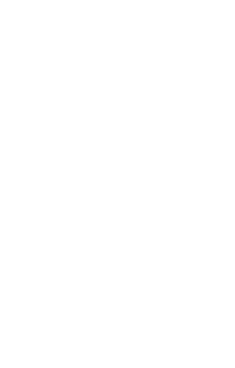
इत्य-कमठ रह चारि धन्ये धुव मंतर मार क्षति कार्न विश्वमा बामुकी पान मुक्तिय के बहु विधि नक्षे विनके सुरासुर करि सहकारी। स्थानम निनम पुरान सिन्तु मधि सुधा निकारी है सुभ क्षेत्र प्रचयन बाधि वैश्वस्तर समर तासो मर्गी इति नुत्रमं शास स्लाम बहु सावपरिन-मानम बग्धे।

- 40

सापा करान तकाम पूरि जक्ता नम नामी। बिल मुंग्ट बहुरस बनज बन विसन विकासी है स्थान सिज्यान श्रीक स्थार रम पान स्वासी। वर्षा हुर उटक हुन्द करि सुक्ष बकायी। फिर फिरोन साहन सम्ब साथ स्थाप साहस्ये। संस्कृतिस्थास वर्ष जरितासरिता सर्वे।

. .

शिवा । १००० वर शाम चारित प्रात्य प्रस्तुत्या । चन्द्राण वर्गम स्था सुन्यस्य वसस्य प्रस्ती । नृष्ट कांच सूध्य सूत्रम बास्त्रम विशेष पूच यदि । सन्तुम २००४ स्था मध्य स्थापन वस्तुत्य स्थापित करि । दृष्टिम प्रस्तुत्व साम प्रस्तुत्व स्थापन स्थापन । १९९७ सम्बद्धाः स्थापन वस्तुत्व स्थापन स्थापन । १९९७





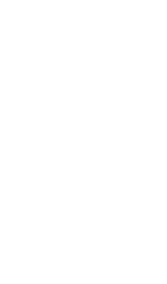












जिन पराग मों चौंकि श्रमत उत्पुकता परें,
रहित-रहित रसवानि रितक श्राल गुंज धनेरे।
बरत-बरन में मोहन की श्रीतमृति विराजित,
श्रन्छर श्रामा जामु श्रालेकिक श्रद्मुत भाजित ॥ ८ ॥
मुख पद धरन सुमाव विविध रसमय श्रात उत्तम;
शुद्ध संस्कृत सुखद श्रासजा अभिनव श्रमुपम।
देस-काल-श्रमुतार भाव निज व्यक्त करन में,
मंजु मनोहर भाषा या सम काँउ न जग में ॥ ९ ॥
ईरवर-मानव प्रेम होउ इकसंग सिखावित;
जज्ज स्यामल धार जुगल यों जोरि मिलावित।
भेद-भाव तिजवे की श्रितमा जब सस-एनी,
योग गहत तिनसों तब मुन्दर बहित त्रियंगो॥१०॥

करी जाय यि जासु परीच्छा सविधि जथारथ, बाही में सब जग की खारथ श्रम परमारथ। बरतन का फरि सके भटा तिह भाषा-कोटी, मचलि-सपिट मांगी जामें हिंग माखत-रोटी १ ॥११॥

जाको जो रस श्ववगाहत जाही में श्रावै। कैसो ह गुनवान थाह जाकी नहि पाँ॥ रही यही श्रवसेस ेएक श्रारज-जीवनधन, चितनीय यह विषय तुमनु सो सब सजन-गन॥१२॥

वंग और महराष्ट्र, सुगम गुजरात देस में, घटक कटक पर्यन्त किंद्य मारत श्रमेस में। एक राष्ट्रभाषा की बुटि जो पूरत धाई, इतने दिन सों करत रही तुसरी सिवकाई ॥१३॥



मुत-तेया-हित नामु राचिर रुचि रहान सहाही। जनमें पृत्र कुनून, कुमाना माना नार्टीक ॥१९॥ जाय फहां अब, बनहि तुम्हें बहि पाले-पासे। याकी घड याकी जीवन धस श्राप मरोमे; निरालंब यह द्यंब, याहि व्यवलंबनु दीनै; ननसों, मनसों, धनमों याकी रच्छा की नै ॥२०॥ यही रहति जननों की केंचन निन व्यभितापा— 'सफ्छ होहि नुव सर्व उच्च उन्नत प्रिय आशा ! सकर ब्रोर बान्युदय-मूर्व की किरन प्रकामीं! नसहि अविद्यारिनि, ज्ञान-मय-क्रमल विकासँ ॥२१॥ 'जागृति त्रिविध धयारि बमन्ती नित सरसावै ! निरमञ पर उपकार हृदय मधि छहरि सुहावै! नोहीं मुजन रमाल, प्रेम-मंत्ररि चहुँ छावें! निज-मापा-कि-एता श्रद्ध लहि परम मुहार्व ॥२२॥ 'कवि-कोक्टि सत्काव्य-कृक अपनी व्यार्टे ! शुनि शुन-गाहक रिमक अमर मंजुल गुँतारें! जगमगाय जातीय प्रेम, सुधरै वरित्र-वल ; सबके हों ब्रादरी उब, उत्तम अरु उज्जल ! २३॥ 'विद्या विनय विवेक प्रकृति छवि मनहिं छुमावे ! दग्र की हा बस श्रन, देम भारत सुख पार्व ! परमातम घटन्यट श्रन्तरलामी, पुरहिं यह श्रमिटाप सत्य नारायण स्त्रामी! २४॥ (दरवनारंग)

कुपुत्री नार्यत क्वचिदिष कुमाना च सविनि-भीशंकराचार ।

. .



हिन्दी-पध-रत्नावङी विपधर बनेगा रोप सेरा खल ! तुमे, पाताल में,

दावान्ति होगा विपिन में, बाइव जलधि-जल-जाल में। जो क्योम में तू जायगा तो बज वह वन जायगा, चाहे जहाँ जा कर रहे जीवित न तू रह पायगा ॥१४॥

खोटे-बड़ जितने अगत में पुरुष नाशक पाप है. लीकिक तथा जो पारलीकिक तीद्रणवर मंताप है। हों पात वे सब सर्वदा को तो विलंब विना मुके

कजयुद्ध में संध्या-समय तक, जो न में माह वुके।।१६/ अथवा अधिक कहना बुधा है, पार्थ का प्रश है यही,

माची रहें मुन ये वचन रवि, राशि, धनल, धंदर, मही।

म्यांख से पहले न जा मैं कल जयद्रथ-बध करूँ, ता रापथ करता हूँ, स्वयं में ही चनठ में जल महें ॥१६५

(अयद्रध-तथ, नगें ३)

श्ददार्थ

१---पद्मावती-परिएय

१—दर≕हत्य, पेट, गर्भ । भान=भानु ।

रे—बिश्रय-धर्मा हुई है । हीर≃हीरा, यहां दॉनों से उपमा दीनधी है। कीर≈तोता, यहाँ नाकसं उपमा दी गयी है। यिन्त्र≈िव-न्य फल, अधरोष्ट से उपमादी गयी है। विह=उसे, विधाता। सचि=शची, इन्द्राणी।

४—चुदृश्यो=छम मया, फॅस गया। फुल्ल=प्रसन्न ।

८-संभरि=सॉभर शांत।

९—चैसह≈वयः, सम्र । वरीस-वर्ष ।

११--पानीय=तज, कान्ति ।

१२—कंद्रप=कामदेव ।

१३—सुरत्तह = प्रेम, छगन।

१४-केली=प्रसन्न।

१८-कमार=कागज, पत्र ।

१९--यंय=याजा।

२०—सूक≕शुक, तोता ।

२१-चिकट=मैला, कुचेला।

२२-- नवसत=सोलह।

२४--सोत्रत्र=सुवर्ण ।

२५-जेम=जैसे ।

२६—गवरि≓गौरी, पार्वर्ता ।

२७--मुद्ध मुद्ध=धीरे धीरे ।

३०--पद्धान=तैयार् किये गये ।



```
11.774
```

–पेदन=पेदनाः षष्ट् । -गौपर्गाःनंग । −गाल=भोक्षर्ना ।

- सिगः=शिष्यः ।

—निर्देशे=मं.ख ।

-रंग्हच्पल ।

—ष्टपाधि≕हःसः ।

-धर्मा=मासिक, ईश्वर । निवासई=कृपा करेगा । –मेरि रह्नाःटट लाना ।

—लंघना≃भवा ।

—सार=प्यास, ईर्बर । लाखी देखन **** साल=ब्रह्मवेना ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका नात्पर्य है। उपनिपट् में भी

"प्रवादिद् प्रवीद भवति" कहा गया है।

—मोटी=वर्टी । विना जीव की मांम=घोकनी ।

—शीदार-दर्शन ।

— संचर=प्रवेश करना है। मालै=कृष्ट पटुँचाना है।

—खोटी=निकम्मी । बाट=सस्ता ।

—पैठ=हाट ।

---पला=पद्धाः।

-- अगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी। बद्या और शिव ती इस परीक्षा में दर्नार्ण न हुए, पर विष्णु मगवान ऋषि की लानका आधात सह कर उलटे उनकी विनय करने छंगे !

s—इनग्रय=ऐंडना है ।







```
राज्यार्थ
```

२१—वेदन≕वेदना, कष्ट । २३—सॉॅंकरी≃तंग ।

२४—सारुस-सार २४—खाल=घोकनी ।

२८ – सिख=शिप्य ।

१९—लेहेंबे=भंड।

३०-ग्वेह-धृल । ३२--डपाधि=दुःखः।

२२—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृषा करेगा । २५ —मॅदि रहना≈डट झाना ।

र्र-मार्ड रहनाव्हट जाना रेर्-लंघना≈भरता ।

रेट—हाल=प्यारा, ईरवर । लाली देखन ''' लाल=मद्धवेता मध ही हो जाता है, यही इसका तालपं है । उपनिपद् में भा ''मध्यविद मदौव भवति'' कहा गया है ।

४०—मोटी=वर्डी । विना जीव की मांम=धोकनी ।

४४—तीदार-द्रांन । ४६—संपरै=प्रवेश करता है । सालै-बुछ परुंचाना है ।

५१—पैट=हाट ।

५ऽ—पला=पहा ।

६०-भग्न-एक ऋषि. जिन्होंने हता, विष्णु और सिव के शोल को परीक्षा लो थी। हता और सिव तो इस परीक्ष से

का पराक्षा लाखाँ। ह्या ब्यार शिव तो इस परीक्ष से वर्षीण सहर, पर विष्णु समझान कवि की लान का बायान सह पर उन्हें बनकी विनय करने लगे।

६८-- इनराय=धेउता है।

४८--योटी=निषम्मी । बाट=सला ।

१४८ हिन्दी-यद्य-त्नायली · ११---अदि=त्लकाः करः। सन्नाह=कवयः। ३२---तने =नेतः।

३३—बाग=पोड़े की लगाम । नाग⇔रीय । ३५—धोन=रक्त ।

३७—रिनस्यन=रण्चेत्र । रूप्य=रख ।

मार≈क्षेष्ठा, यस्र । गजनेस≈ग्यनी का बादराहर शहापुरीन गोगी । अर---विही-चारी । बीजु-विज्ञानी । स्टब्स्य । कीनिगःकीपुर ।

श्तन स्रान=संग्रामार, लचपच । ध्रर=पृथ्यीः । ६?—नह=त ।

४४--परिटियः='नाश्वन सा । हर बासह=हरे वांस । राटियःगाँठ बाय कर किस=रिया । यहचा-वांदन किया, मुनान

२—कवीरदास की साम्बियाँ और अस्ट १—कश्वास-१००मा

र---परनास====== । ----पनगा====== वरा नगल पर समिवस्याही। ----पार्टन स्टेडिंग स्टेडिंग स्टेडिंग

·——सन्द्र'- जन

र—चर काव-सब रहा स—चर कृत्य-सब रहा

- - पटामान-पादाना स्था ही बार नातियो सा एक है। 'इन्टेयर पादान रन्द्र संस्थासका वाप हाता है। शब्दाध १४२ २१—वेदन=वेदना, कष्ट । २२—सॉकरी=तंग । २४—खाळ=धोकनी । २८—सिख=शिष्य ।

२८ — स्सल=।शय्य । २९ — लेहें दे=भूंड । ३२ — खेह ∈धूल । ३२ — डपाधि=दुःख ।

२२—धर्ना=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृषा करेगा । २५—मॅटि रहना=डट जाना ।

३६—लंघना=भ्या।

३८—लाल=प्यारा, ईर्बर । लाली देरान ' ' लाल=प्रक्रवेत्ता प्रश्न ही हो जाता है, यही इसका तात्वर्य है । उपनिपर् में भी ''प्रक्राविद प्रक्रीय भवति'' कहा गया है ।

"महायद् महाय भवात" कहा गया है। ४०—सोटी=बर्टी । विना जीव की सांस=धाकनी ।

४४—माटा=वट्रा । ादना जाव का सास=धाकना ४४—दीदारः दरान ।

४६—संचरी=प्रवेश बस्ता है। सालैन्य ए पर्टुचाना है। ४८—सोटी=निकामी। बाट=शस्ता।

५१—५ॅंट=हाट ।

५५—वला=वला ।

६०---भर्गु=एक करि, जिन्होंने बद्धा, विष्णु कीर सिव के शीर की परीक्षा की थी। बद्धा ब्यीर शिव की इस परीक्षा से कर्सार्थ स हुए, पर विष्णु भगवान कवि की हान का क्या-

सर् बर चलटे चनकी विनय बरने लगे। ९८—इनसथ=रेटल है। ३१—अंपि=ललकार कर । सन्नाह=कवच **।** ३२—तसे=तंत्र। ३३-चाग=घोड की लगाम । नाग=शेष । ३५—ओन≃रकः। ३७--रिनस्येत=रणचेत्र । रूप्प=हस्त्र । ३९-- धर=मेय । पती=पंक्ति । नासि=नली, बंद्क । तीरह=तीर । सार=टोहा, यस । गजनेस=गुजनी का वादशाह शहानुरीन होस्टी । ४०--- चिहौ-चारो । योज=चित्रली । स्र=सर्व । कौतिग=कौतुक । रगन मगन=मरायार, लथपथ । धर=प्रध्वी । ४१--नह=न । ४४—परिदिठय=निरंश्वत की। हर वॉसह=हरे वॉस । गठिय=गाँठ वाँच कर । किल-शिया । दहसा-दहित किया, जुमाना श्चादि लिया । इम्मा=दरा किन्दा । हन्म=हुन्र । २---कथीरदास की माग्यियां और शब्द ₹--परेशीम=प्रणास । ५---वनराप=धनराज वहा नगळ पदः साम=स्याही। ५-- चादि नाम=प्रशास का नाम साय नाम।

२०—पदमिनी=पद्मिनी क्षियों की चार आतियों में से एक है। किन्तु यहाँ पद्मिनी शब्द से कीमात्र का बोध होता है।

हिन्दी-पद्म-रत्नावली

80/

६—सिटिव्यन्त्रः । ११—सनुर्यो=सन् । १६—जरा=बुदापा । सुद्रवसरी । १९—करु चीत=सन् लगा ।

ब्ह्या-मोद् ।

१४९ शब्दार्थ २१—बेदन=बेदना, कष्ट । २३--सॉॅंकरी=तंग। २४--खाड=धोकनी । २८ – सिख=शिष्य । २५-लेहें इं=मंड। ३०-गेहच्धृल । **३२—**इपाधि=हुःख । **३३—धनी=मालिक, ईरवर । निवाजई=कृपा करंगा** । २५-मेंदि रहना-डट जाना। ३६--लंघना=भृखा। ३८—लाल=प्यारा, ईरवर । लाली देखन *** लाल=ब्रह्मवेत्ता ब्रद ही हो जाता है, यही इसका ताल्पर्य है। उपनिपद् में भी "प्रहादिङ् प्रहोय भवति" कहा गंया है। ४०-मोटी=वर्टी । विना जीव की मांस=धोकनी । ४४—शेदार-दर्शन **।** ४६—संचरे=प्रवेश करता है। सालै-कुछ पर्वेशना है। ४८--ररोटी=निकमी । बाट=शस्ता । ५१-पैट=हाट । **५**७—प्ला=पहा । ६०-- भ्रमु=एक शापि, जिन्होंने ब्रह्मा, बिरणु स्पीर शिव के शील की परीक्षा ली थी। हामा और शिव तो इस परीक्षा मे हसीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान कवि की छान का सामान सह बर उलटे उनकी विनय करने लगे। ६८—दूतरायव्ये ठला है।

हिन्दी-पश्च-रत्नावली ३९—जो मन पर चमवार है=जिसने मनको वशमें कर लिया है। ५२--परतछ=प्रत्यत्त । राष्ट्रस=गत्तिस ।

५६—सस्किरत=सम्ब्रत । भाषा=हिंदी भाषा । सत≈सत्य । =१--मासन लागे=पद्मनाने लगे, खीजने लगे ।

140

८२-- प्रीतम=परमात्मा से वात्पर्य है । सनी=सो गई । ८३--जूमना=लड्ना है। मॅडा=बटा है। धमसान=घोर रण।

मस्मान्तर । कावराँ-कावराँ को । ८४-समुरी=संतोष, धैर्व । सोंटा=इंडा । मगरूरी=धर्मं ह ।

 अप-मानिक=यहां माणिक्य से परमान्मा का ता पर्य है। अप न= धापना । धन=स्तो । सचद=दाव्द, नाम ।

८६---बाह =कामना । निरयासना-इच्छा-बहित । तत्त-नन्द, मग्न-शान । रच=मन्रसः ।

मालह वय की चावस्था तक किसी स्वी का मुख नक नहीं बग्या था, किंतु महाराज रामपाद की भेजी हुई वेश्याओं ने इन्हें श्रापने रूप-लायाय पर मोहित का तपो अष्ट कर

िया। पारास्तर=पराश्तर वेदश्यास के पिता, यह भी एक स्तीपर सुन्य टाकर अपनी नवश्रमा से बाथ यो पैठ थे। कन्दे का व्यागिया का एक सह । साहित-सालक, परमेशका । रमना=मायः स श्वाधवाय है ।

ः --पाल-भावता

/---नवनात=मरुखन , गल=चचल ाग=लड । माधुरी= मिटास । यज्ञ हारा स नात्पय है । क(चर∞सुन्दर । एकी= ரச ஆர் ப

२—अस्वराइ=लटपटा कर । हुटुँधा=दोनों श्रोर । पुरुकन⇔ पुटनों के बल । महर≕गोप, नंद मे तात्पर्य है ।

रै---गुदियाँ=पर । मृतक-मृतक=गहनों के वजने का शब्द विशेष । मुखर=शब्दायमान । पियरी=पीटी । भीनी=रम-

विश्व । सुन्वर=शञ्हायमान । विषया=पीला । भीनी=यमभरी, मीठा । यारो=छोटा चालक । ममिविन्दु=कालल का
रिटीना । स्थमम मर=पंचवाण-पागे कामदेव । घरनि=की ।
मलदावनि=व्यलानी हैं । सुचर=चतुर । वृत्तियाँ=छोटे-छोटे-

दौत। १र—रेंगै=पलें। रेंर-रटे, धार बार कहे। जोद-मोद=जो सन से आवे बही। एटि व्यंतर-दृष्ठने बीच सें। व्यंथवारि-जोबी।

प-पीर्य स्पेत हो की गाय । वाष्ट्रहिन्यलसह को । वीर्ती= व्याह होगे । सीहन्यलस ।

च्योकिच्छंजली । अल्यालात=च्याच्याता है, हिलता है। तिपट=विरत्तुत । घरव्यो=तेकते पर भी । हीको । दौराल स वहातो=भुलाया देने पर भा न भुल्या । दाप=दर्प, नर्च । ४ -रिस्मुबो=नय किया । रिस=गुस्सा । तातु=विता । यल्यो=

चलराम । अवार्तन्युगलयोग, रद्यं र्यं की उपर लगाने काला । शृत⊭पूर्त । की स्कीतद । की स्कीत ८—संबोद्यान्य स्थान, जहां पर श्रीकृषा वट कुछ से लोने

८—मंशीवटन्तव स्थान, जहा पर शीवच्या वट एक में तीचे स्वीतिवाद दशी बजाते थे। सीन परेन्स पा शीने पर इ शीवानशीवा, सिवहर। नेदन्यपट (बगारियान्यय) या शीत स्वाप्तवात ।

- च्यापन्यत्रमार । भोगातिन्य यी बरती है । ग्रीन एसीस । एपि प्रिन्देशस बर बर । भोगिनश्रीही । बाहतिन्यसमती है ।

हिन्दी-पण बत्ताव नी 943 १०-- वतैया≈वलाय । सिम्मावत≈तंग करते हैं । घिरयो=धमकी

सी. और। ११--दोटा=उडका । गादे करि=मजवनी से । सॉॅंटी-इडी ।

समेश=देवतीं का पर्वत: वहां समझ पर्वतीं से अभिशाय है। मारॅगपानी=हाथ में धनुष धारण करनेवाले विण्णु भगवान ; यहां ओक्ट्रण से तात्पर्य है । १२--भेंबरा=लटट् । चक=चकरी । चारे पर=तक पर । पोरी=

डबादी । तारी=ताडी । बारी=बाडकर । तुन हारति तारी= वात से तिनका द्याकर तोउ-तोड कर फैंकती है, जिसमें कहीं नजर न लग जाय।

१३--- पारे=छोटे से बालका तिलक तिलक=सन्दे सन्दे। चारन≠ चराने के। व्याध्यक्षके।

१४-किनया-रोग्ड उद्भग । निद्धविया-स्थातिस निष्कपर । कारत=लिये । १५-चिरायन=चारो स्रोर सक्ष्य लगवान है पश्की के इकड़ा

कराते है। सींह=भीगर। बदगद =बहुन्म कर। चति=छोटा मा । विमाद=पैटल बना कर ।

४--- ब्रह्मायम-वर्णम

१---चिश्यन=चैनस्यना का समूह परम शिक्य सग=पहार वीक्स वर्तात ।

---- द्यविरुद्ध=वेराक टाक हिल्लिसन्सर विभूति=ऐदसर्थ, प्रभा।

3—- शक्यण≈शय भगवान ।

>---रमारमनः रक्ष्मीतस्य विष्णु भगवानः वानिकः इटा. शोभाः

રાગ્સાબ

६—प्रति=भौरि । किन्नर=देवतों की एक जाति । सुखगुईा≈ व्यानंदकारिणो । सुदी=सुन्दर ।

७—क्तमः-मुवर्ण।
८—चित्र को=चित्रित, लिखा हुआ। पोइशदल=सालह पंग्रहियों-बला। पत्राक्रति≕गोल।

९—कमनीय=मुन्दर । किश्निका=कमल का छत्ता, संवर्ता । पुर--दर=दर-द्रा । विभावर=सूर्य । निवर=समृह । टप्ट्र-नारा । कौस्तुभ=एक मांगु, जिसे विष्णु भगवान धारण करने हैं।

५—राम-राडग

११—क्रंडिन=ग्र हिन, श्रपर्ण।

१--विषमना=हार-गरं में भेद-युद्धि ।

ব বংলাগম-মান্ত্র বন্ধ কর্তুক ব বংলাগম-মান্ত্র ক্রিয় ব্রহণ বাং ক্রেন্তর ক

३— भौतिक तत्र तत्र व्यक्ति । भौति वदः वनभक्तित्रम् प्रश्नाम श्राप्तः विकास तात्रः न्यूप्य श्रीयः त्यस्ति । श्रीप्त श्रीप्रत्या प्रश्नित अध्यात्राः पत्री प्रश्या याः नोन-कात्र क्षाणीय तः तात्रात्र या या सक्षाप्ताः श्री

च्या १ व्याप्त १ वर्षा १ वर्ष

the state of the s

हिन्दी-प्रशासकात्रको जगरान्मा=विश्यान्सा, परवक्षा । वादी=पानी । संपुन=भरा-हुमा । महाम=तालाव । विघु=चंत्रमा । सम्रा=हिरण । ६--वानिमेध=धश्यमेघ यद्य। गुनानीत=निर्मण । पुरंदर=दे । परिचरता व्यरिचर्या, सेना, काम-कात । तमा=पार्वती ।

142

मनतम=भरा । सभावदि स्वाड=चंचलता छोडका, निरंचल 27122 27 1 »—श्रहनिमि=दिनगन । गानीत=इन्डिय-झान से परे। पार=परे ।

८--गाहा=गाथा । ५.—सनदानि ≈मनद, सर्वदन, सन्तामन चीर सर्वनुकृतार, यह महा के सानभी पत्र कहे जाने हैं। जानकप=मचर्ण । निष्य=

समृहः श्वनीक=सेनाः। श्वत्रावित=त्रेषप्रीः। विष्टम=सृगाः। मरकत्रक्रीत्रम । सायनवर्षीत, बंद । एटिकव्यक्रिक, विज्ञीर । प्राट=स्वर्ण । व स=धारा । /---म्यर=वातनपान । पात्रावत=परेवा, कवृतर । मारिश्वा=

५ -- नय - चान वसानिवास - ८०मावसण , १४८ - यहरे । 1-18 + 18 1 - - १४'% अलग 'नश्ला हाता समह । जसनानाकस्तान ।

वेश बावाःसप्तक कोहारःवीशहा

मा-वेगमा त्रासहा त्नमा वाविषा न्यापष्टी ।

-- म राज्यादा चाराच-शा । राज्यासमाह व्यनिमा-दक चामना नामना वाहमा खाल्ड कर्मनादयौ ।

भाकारः वादर-पद् हररात स्वरत् है। सर वादाः। क्रमान्ध्यान जन्मेद्रकात् ।

- र—जाल=समृह्। लीलिवे कां≈निगॐने के लिये। वीधिका= मार्ग। सूरि=बहुत-से ।धूमकेतु=धु=द्रल तारे। उचार्ग= नेगो। सुरेसचाप=इंद्रधतुष। कञाप=समृह्। सरि=नदी। जानुचान=राज्ञस।प्रजारोहै=जळावेगा।
- र—चुनुक=हंककर । चुनुकारी=हुद्धार, जोर जोर से रोना। निकेत=घर।भामिनी=को । छारा=छोकरा, यशा। महिष= भैँसा। वृषभ=र्वेठ ।
- ४--नाद=शब्द। सविषाद=दुःख मे । रावनी=रावण। मारनंड= सूर्य। यावनी=वामन, विष्णु का एक श्रवतार। श्रावनी= श्राना है। वामदेव=शिव। वादि=स्वर्थ।
- ५—परानी जाति हैं = आगी जाती हैं । मंद्रीचै = मंद्रीदरी; रावग की खीं । मीजि = मंद्र कर । बापुने = चेवारा । चाडिदै = नट करेगा ।
- ६—डाटन-जलना हुट । केसरी-कुमार-केशरो बनर के पुत्र हनुमान निली-एक निल् भी । व्यवार-धर । डाढ़ी-जल गया । जुनिवनु-काटने हैं, पा रहे हैं ।
- अ─भीतः हीट प्रषः सीतः सामातः श्वीतः पडे से से देहल एतः, कमम से घवताकरः गादे = प्रष्ट से गान को सत्तावनी = गप होकताः मावनी = सावन सीन की मुसल्यार वर्षाः।
 - : -हाटक स्माना लायस्थामी पत्न सायस्थान, शिनः प्रयमान=पत्न वायु जिवायस्थानन क्राया । गयस्याता ।
- विराट=प्रवाग्नः । उपपार=ग्रीकः । विमाद=ग्रीकः ग्रीकः । स्वानः नीकः यादा सा
 त्रापः भ क्षाः । स्थापः । स्वानः यादा सा
 त्रापः भ क्षाः । स्थापः । स्थापः विद्याः । स्वानः । स्वानः । स्वानः ।

145 हिन्दी-पध-रत्नावली रामोर-सृतु-पत्रन-पुत्र हतुमान । बुद-बुटी । मृगांच-वैगर

का एक रस विशेष ।

७--दोहायली

१--परमारथ-मुक्ति । बारिद=मेच । ४—गापर-भेड ।

५-परीहरा-पर्योहा, चानक ।

६—श्वादि संक्षित-स्थानि सत्तत्र में बरसा दुशा जल, हिमे पपीरा पीता है।

७-- असन सोजन।

११--नरग-साँप।

१२- गीर विचार, ध्याम । १३-सुकान सुकृत, पूर्व । शहपु कीयाउ ।

१४-मित्र १) दिख् २) सूर्य ।

४५-वृद्धि स्थानी काक की कारिया। मृत्य वस्ते पर !

 में व स्थाया निम पुल्लम सम्यामी हुना ! १ -- यम हत्रमः

१८— त्रवास एक काल्कर यह भा वाना वासनवा सुख जाता है

१५ -- मार्टन में किंद्र कार्टन कार्टन वहा विभाव गेरहण • '- क्या क्या वास

・ノー・計学す 好き色 =-- इम-पहिषा

- अक्षा के असर १ असर १ अह विकास जिल्हा स्थापन माराव म र पत्र है प्रानिव्हेश्य सेहाकपुर । वरेही



हिन्दी-पंथ रत्नावजी 845 ४-सुबरनमई=स्वर्णमधी । वाय=पैर । गीन=गमन । बंडेबीर= बलरामजी के माई श्रीकृष्ण ।

६--पगा=पगड़ी । क्रेंगा=कुरता । उपानह-जुना । सामा=साज, सामान । अभिराम=संदर । u-कलपहुम-स्वर्ग का एक वृक्त, जा सत्र इन्छाओं के पूर्ण कर देता है। खलेट्या-गड़वड़ी, सीच विचार, चिंता। श्रांश≲श्रांकः ।

, ८--जार्य-देन्य । इतै-यहाँ । परात-याल । नैनन के जल साँ-थाँसचा से।

५-- तंदुल=चाँवल । तिय=म्बी । हर्वे-थै । ११-कॉम-बगल । १२--जीरम-जीर्ण, पुराना ।

१३--गोय-द्विषा कर । पनीविधि लुव भन्दी नरह से । पोउ॰ योटली । पाछोट वडी । चामर चीवल । चाव-प्रेम ।

१४-- रूल कमक, शूल । हियश हदय । धरहरे कॅ।यनो है । बोक थोक भएड के मगड़। हालो कप। चकिन में-चकर र्शियों में ।

१५-पावक एक पाव । सभा धान्य विशेष । कन पनि । १८-१कडि गरीय के। १५-विश्वकर्मा देवनाको का शिन्धी। जाहे पैदल । सब-सर्वि ।

२० - तद्राय यादवी के राजा श्रीकृष्णु । भाग भाव । १०-रहिमन-सुघा

--- भार बच से। ४—गाम यधन गाँउ, नोक रहस्य । निरम नीरल । ५--हार्=डाहः। पात=पत्ते।

६—दर-दर-द्वार-द्वार । मधुकरी-जैसे भौरा एक-एक फूल से थोड़ा-थोड़ा रस लेता है, उसी प्रकार एक-एक घर से थोड़ा-थोड़ी भिद्या माँगना ।

८-दाव=आग ।

९—कमळा=लक्ष्मी । पुरातन पुरुष=सनातन ब्रह्म, विष्णु भगवान् ।

१३—केर=केला । रस=धानंद, मौज ।

१५-विपे=योच में।

१६—सजाय=सजा ।

१७-सन=हत्या।

रेट-भूगु=एक ऋषिः पाठ २, छन्द्र ६० की टिप्पणी देखी ।

१९—वित्त=धन । ऋंबु=जल । हित=हितकारी । ः

२२—कृयरो=कुवडा, टेटा-मेदा । नखत=नचत्र, तारा । 🗥 🔻

२४-गादा दिन=फष्ट का समय।

२८-वमन करि=क्रै करके । स्वान=कुता।

२ै०─रसहिं=श्रानंद के। । वंधु=मित्र, भाई । २२─पिक=के।यल ।

३५--सुनि-पतनी=गौतम ऋषि की मी श्रहस्या।

३६-नाद=संगीत का शब्द।

४२—दही=जलाई, मेटी । भावी=होनहार ।

४४—मही=मट्टा, झाझ । बिलगाय=श्रलग हो जाता है । भीर= कष्ट, विपत्ति ।

४५—यैग=पैर । यमुघा=पृथिवी ।

४७—हाइ्ये≃हगानी चाहिए ।

४८-सहसाति=शान्तिसहित ।

हिन्दी-पद्म-रत्नावसी \$ 60 ४९---फरिया-काला । ५१--पति-मान-प्रतिष्ठा । माध्यन-चारानहार-श्रीरूप्ण । ५३--यागर=भिर । ५६---ऋलारी-फलवार । **५८--विभावि=स्याधि, रोग** । ६०--धगम्य=जहां मन स्रीर वाली की गति न हो; महानंद । ६०--नै-नग्र हो दर । ६४---विपान-सींग । ६६---हरिन-माया-मुग मार्गाच से सात्पर्य है। ६७-दिकर=संवक, दुत । ६८--वर=चार्ह । वानन-धन । ••-कृष-यात्रा, यहा मृत्यु स ऋभिप्राय है। s=--धीस कम । मगळे इस । ७४-- जती यति, मध्यामी । ्रं-सन्त सरा। १५-- चर्द्रक चर्नेन्द्र । - -- मुकुरराया पीठ फेर ही उथमीन हा एय --- श्रमा श्रमत

११--१ (उध-र्श्वा-विन्दा

খায়-

272

:—स्प्रतिपारी सरीवासी अस्तिवार पार







हिन्दी-पश्च-ररनावस्त्री 858 ८—पाती वर्ताः गुलसी, विस्वपत्र सादि । सेहराव्हार । महरू स्वामारिक व्यवस्था । सेहश-घर । सून्य-अप्ट्यावन्या । श्रद्धान तम चंद्ररा=त्रावांघकार का नाशक । नाम-भगगत ॥

१४-विहारी-मुक्तायली १---प्रयत्याचा सोमारिक दृश्य । सागरित्वनुर । भारित्यत

हरिम दुनि हरे रंग की जोमा, पीके अर्थाम मिनकी क हर ली गई हो। काछमी कमर में पडनने का एक पेरहार बच्च । वानिक

हारा । ----वरि हाल । साथ-वेग्यो । गुणा भृषणी । असति भावकती है । बाहानक बन में मां

हड़ जारा एक बार अज क एक बन में बड़ी ही प्रव कार। तरा सह । त्याल यवश सव । श्रीह्रक्या कम शासक का रामान रामान प्राप्त कर राष्ट्र ।

भाग । देहरा=मंदिर ।

· स्टब्स स्थानदिवस - - न शन्दरना अववस्थि शहर-दश

---weeks were were so

-- र र र १ र राजावर अस्त सम्बद्ध । बार्यानी at ge 'age in ter nen verne printet!

-- वर देन वर्ग व विकास क्षिय क्रिया है

< राष्ट्रं ता व प्राथम . - माना राज्याच सार काल समाव हाती। ४--पुराप दी शतार्थी का एवं, शांध हासम । यह-हुःम । मावग क्यायाय ।

१५-म्यूनि धूनि, येद । सुमृति श्मृति: धर्मदाग्य ये: प्रत्य । निमक् नियंख ।

रि—पटक -चमक । रज- धृत । राजस्य शासन । नेह- (१) प्रेस

(६) शेला

२१—कुरंग-सुग⊣

२२—शाग=पेतुर्। व्यायव्हजता ।

२५—यस्यानः वीतिः घणेन । सराध परयः पितृपश्च ।

२६--वायस-धीवा । चलि श्राद्ध का भोजन ।

२०-सरैः फाम स्राता है। कॉचै अन कपटी।

रेर-परिया=पेयट, सहाह । सीधि=स्योज । पाहन=परथर । २२—अजनः(१) अजन करना (२) आगना। अञ्योन(१)

भजन किया (२) भागा । नासों व्यव्मेश्वर के नाम से । जामों=संसारी विषयों में ।

३४-पतवारी=फरिया।

३६—दोरघ सांस=त्राह । सार्ड=ईश्वर ।

३७—श्रनाफनी≔श्रनमुनी करने की क्रिया । गुहारि≃पुकारि । थारक=एक वार । यारन=हाथी ।

२८-ध्यानि=स्वभाष ।

३५--वाय=हवा ।

४३—वलियै=वलिहारी ।

४४--- श्रपना-श्रपना विरद्=श्रपना श्रपना वानाः जीव का पापो का कमाना और परमेश्वर का पापों का नाश करना।





१६८ हिन्दी-पण-रक्ताणी १७--वाँडी-वर्णन

१—भार पन्ना-भार के वर्ग । लील-चक्ट । मार्ट हे सनी

न्द्रनारे-(१) साप्रण्यः सुन्दरमा (२) नमकात्पनः। ३—नियम-वेदः । ध्यायमञ्ज्ञास्यः सुन्नानः चनुरः।

६--सार वारिक्षर त्रारम् ऋतु के क्रिया । भीरतर इन्ये सकान पील-प्रवक्त सारेन्द्रा भील लक्ष्य, नवील । ६--बेन् -सीसुरी । निवाद-साव्या शीला चर बीला भी शासुरी के सप्य स्वर से चड़मा के स्था से तुने हुए मुग

शिशिर, चीर हैमन । कानम व्या ८—सरकन बीतमा । प्रमुख सेंगा, विद्यम । बहुन मुन्तर माता । हार होगा । चारान गुजा । नरकरिन राग्य क सरीहार

भयः। पञ्चमानग्रहाधीः। चयुरुहानकः वास्तरः वस्तरः सानसः

भयाना नापनहा १५- ४म पड १.३ल सावह सावह

११--- १वल्य क्या काइ प्राची स्था। अराच साहित साह-

THE TAIL AS AND A

१२०० चानक प्रयोश। शाक चक्या १६०० श्रास्थकर - सम्राय (ज्ञान है कि ५ १५ अम्ब एक गमन

न्यवी बटश्च दिखाइ न्या है। उसके । ४ एने पर नहायस ११९१६ प धारण कर रन्यन है और समस्त स ॥ रा अपर

२१—सिद्धान्त-मार

१—हिनभंगु=चणभंगुर, नारावान । नागर=चतुर, रिवर, ।

४---वच्चना-मिण्या विचार । वज्ञहन्छड्गई-भगड् । निवारनी रोकना चाहिए । प्रवंब-चटमार-हाटी वार्ता वी पाटताला ।

६—गृप=वुँचा।

u-जगमगं = अत्यक्ष रहा है।

८—हुत पेट् । इंपतिः पतिःपतिः भाषाणः श्रीः स्था से नाष्यं १ ।

५-पारितः सीनि, शंशीपवाशी पी साता। १एपसानुरूक्षी राधिवाशी वे पिता। १८---सीवराद्यास, श्रीकृत्याः सन्सावशास्त्रीत्रा स्टब्स

इय पानन चारिए ।

tim graffe di Ministre de

• • शिरुपर वत दार्शकर्मा

् ४ न्याप १ क्रम्या

e pro see se se service par

in the second of the second of

५--मिख=शिशा, उपदेश । भेषत्र=दवा ।

६-- सारसी=वर्षेशा ।

श्रीहा=नीच । छोलर=दिहला, जिसमें थोड़ा ही

भरा हो ।

११ —पिसुन=कपटी । दाध्यो=जला हुचा । खाँछ=मट्टा । १२--विरवा≈पेत्र ।

१४-- रसरी=रस्सी । सिल=शिला, पत्थर ।

६५--विसम=विलम्ब, देर ।

१७-श्रयोध=मूर्ख।

२०-- प्रद्धि=समुद्र । नाय=पानी ।

२१-- व्योक=चंक, वात ।

२२-- सरमुति=सरस्वर्गा ।

६५-गाहिश्माली ।

२६--- श्रव=श्वाम । नियौरी=नीम का पत्ता ।

२८-- भीर=जगह। २५--तैर=यैर । विषे=धीच से ।

3१ - परचै=परिचय, पहिचान । भाय=भाव ।

3२--गाथ गाथा, कथा।

३३--- निदान परिग्णाम, कारण । भान=भान सर्थ ।

३५- विभी=विभव, गेरवर्ष । उन्तर=चन्द्र ४१-- बसाय वश ।

×--- मोटी=वडी, गर्भार । पात्र≈वरनन प

vs-रमन रमना, जीभ । कल्लप≍कन्लूप कल्ला ।

१५**५- लोक**=लोग । पय=युध । पयोचर=स्तर ।

२१--सिद्धाःन-मार

१—हिनभंगु=सम्बद्धाः, नादायान । नागग्=चतुः, रसिषः ।

४--फन्पना=मिथ्या विचार् । फल्ह=लड़ाई-महाड्रा । नियारेनी रोकना चाहिए। प्रपंच-घटमार=झुठी वार्ती की पाठशाला।

६—शृप≕कुँवा ।

उ—जगयर्ग=म∕रुफ रहा है । ८—हम-पेह । इंपति-पति-पन्नी; श्रीकृष्ण श्रीर राधा से

नान्पर्य है। ९—फोरति=फोर्नि, श्रीराधिकाजी की माता। ष्टिपमानु=श्री

गधिकाजी के पिता।

१०—मॉवरो≕रयाम, श्रीरृष्णु । मनभावरी=मनोवांष्टित । रसा-इये=पागना चाहिए। ११-- 'नागरिया'=नागरीदास ।

२२-गिरघर की कुंडलियाँ १—अपायन=अपवित्र, श्रशुम । गाहक=प्राहक, खरीदनेवाला,

शह करनेवाला। २—व्यपंग=लूला-लैगड़ा, व्यंगहीत। सींह=श्रवय। परिहरिय=

छोड़ दे।

४-- त्रा स=भय । लंकम=रावण । बाल्यो=कहलाया, प्रसिद्ध हुन्या । ६—नारा=नाला । मारै=मांड, मारे ।

ऽ-- परस्वाग्थ=परार्थ, परोपकार । सीस**ःःः दीत्रै**≈प्राणों क नोह छोड़ दंना बाहिए, प्राण-पण से रज्ञा करना चाहिए पानी=मर्यादा, इन्द्रत व्यायरः।

८—बाहतहि=ग्हतं हुए ही । वाज=एक शिकारी चिड़िया ।

द्विभी-पच-रतावर्ता ५--वन-वाहे। माँबै-वहना रही है, दुशी होनी है। ठाउँ-अगह ।

!०—पीरिगा=द्वारपाळ । यनिता=की । सपै-प्रश्नाये, बनाने । नार्

बेना-किनारा फाटना, घलम रहना । १ — बेगरभी=नि.स्थार्थ । विरला=एकाय ही केाई ।

२—हॅमाय अस्टाम, दिल्ली । रॅग=बानस्य । २३-गंगा गुणनाम

१-- इरम=वन्द्रप, क्षप्नुवा । कोल-श्कर । क्षत्री:शीधन हीती

है। पैत्र छटा । यितिवनिति । रत्रमन्यदार चौरीजीमा भागे का पशाब, कैलामा । जानिकामा हाटा शोधा ।

<---नेषहःनिक भी । हनाःचा । शीहःमें भी । कर्षाही कृषः कृता । दशादार=आर्श्यात जार कारती=अन्य कर्मगा ।

÷—धीरा चयार, रथम शुच्च नियाम±वनन वावन्यानी ।

बात=बाय पापन की कान है जापा का नाम सक 45 184 E

--- 41 to tal beid, dette fedora te antu-रयान बद्धार कर अवस्थात यस स या है। इस म है मानगरना म पर है दिश्वामानीस्पृष्ट

thereware and the same गण त्राचनार सार्थ साम्बन्धन स स्वता दिय स्थ

41 000 · - 4 21. 1771 117 21 214 214 214 21711. 2714

. राष्ट्र राष्ट्र या च र र रहती शह सीरमण स्ट

WITH MARY A ME SHIP SINE OF KINETER

- तेज से भस्मीभृत श्राप्ते साठहजार पूर्वजों का उद्घार करने के हिए, पृथिवी पर गंगा का छाये थे। बिल्डानी≃ज्याकुड, तीन-तेरह।
- ७—गात=शरीर । उराहना-उपालंभ । मांच=मीत । श्राप=जल । कालशूट=समुद्र में से निकला हुश्रा विष, जिसे शिवजी पी गये थे । श्रटहर=देर, संज । तालयं यह कि गंगा-जल-पान करते ही जीव शिवस्प हो जाता है ।
- ८—जन्हु=एक ऋषि, जिनके नाम से गंगा का 'जान्हवी' नाम पढ़ा है। श्राह्मी=श्रन्द्वी, उत्तम। धनेस=कुवेर। मीलि=शिर।
- ९—निगम-निरान=वेद का रहस्य। ही=हृदय। उच्छन=वसी समय, तुरंत। प्रनच्छन=प्रत्यस्य। अच्छ=ऋाँसः। इंदिरा≃ टक्सी। बीधे=विधे हुए, बैंधे हुए, उलके हुए। अव=संसार। गुविंद=गोविंद, भगवान्।
- १०—श्रसम=ते। वराधर न हो; यहां तीन से श्रमिप्राय है। ठाइ= लगाकर । कृट=शिखर । भंगै=भाँग के। पृञ्जते=इज्जस करता।
- ११—क्तामी=धोखेवाज, धूर्त । श्रवाइन के=स्रागमनों के, स्रान के । सोर=शोर । वाट हेर्रे=प्रतीचा करते हैं । नेंदिया=नंदी; शिवजी का वाहन ।
- १२—रस्र=त्रानंद । रौरव=एक नरक । विया=त्र्यया, कष्ट । सुरी= ग्रीवी । साहिवी=त्र्यमीरी ।

२४-श्रन्योक्तियाँ

१—प्रस्त≃फूल । सिख=शिज्ञा, उपदेश । केटि=करोड़ । बहोरि= फिर । बहारि दिन≈त्रसंत ऋतु । सारंग=भौरा । २—संमर-सात्मििं । ग्राथवी-क्ता विशेष । पूरी-पूरी की । सुर-सिर-वारि-गांग-जल । विश्वय-खोड़कर । पद्पद-भीरा। पद-बातवर से इयेड प्रयान हु: पैर ! ३-सातमञ्जी-शात्मिल, नेमर । गोंधे-लट वाये । खानिय-मांस। फ्रांटा-भीरा । चतुक्त-क्यादरक हुए । मुक-श्व, तीता । ४-रद-द्वार । फेहरी-सिंह । जरा-बुदाया । जंग्रक-मियार ।

हिन्दी-पद्म-रत्नावली

Pu S

गाजिन्तरक रहे हैं । न्हेंबरी-लोमही । ससक-वरहा। सुतंत्र-स्वतंत्र । पंतु-लेगडा । ५---वाट-राला । ६---वतै-वर्ताः परलेक । इत-वर्ताः समार । तरनी-नीवा।

६—इतै-बहॅं; परलेकः । इतन्यहें: ससार । सरनी-नीका । पथी-पिकः । ५—जरजरी-पुराले, ट्टॉन्स्टी । अवर-धकः, व्यवर्तः । पार्दिः

रामा । आरु=भाग । मारु=मार्ग डाल्नवाला । विस=विषा । ५—पार्वा=विद्वा । ग=ग्ये । भामै=मारुम होना है । तम=अंपेग ।

४—पाता=(बद्धाः । शन्तयः । आस=प्रान्धः झाता हः। तम=अपनः। सवासा=धरः । चर=चलः, ऋतिन्यः । 'ः—मुगर्ता=मुक्तः । चेत=चना तः, ऽञ्चलित करदेः। सिध≠मिबिः।

--मुगर्नी=मुक्ति । चेत=चना द, श्रव्यक्ति बरदे । सिधि=मिबि ।
लाव=लगान्त्रा । अय=क्रन्याग ।
''---बार्यग=पग्ली, भोला-भाली । वाम=स्वी । वैहर सायका ।

कन-पति, प्रशासमा से जाराय है। तत-तत्र, मनमाना कामा नाह-नाथ, पति। ये-का । सूख्य-चलकृत ब्रोकर, गर्टन पट्टन कर। अनुकृते-केस कर।



335

हिन्दी-पद्य-स्लावजी

७--प्रतत्तः अरयत् । लुक्त-क्षिपने हैं। ऋषिकलं क्यों का त्यां, पूर्णः। कार्भिदी व्यमुनाः। जिली-जितनीः। रजत-पोटी, रवतः। उच्छरत=उळ्ळलता है। निसिपनि -चंद्रमा।

८--कूजन-योलते हैं । कल-सुंदर । पारावन-परेवा । कार्रवन-सारस । जल-नुजुट-पची विशेष । यकताक-वक्तवा । कर् बगुला । पिक-कोयल । रोर-शोर । ५-- बालका-बाल । बतराये-फैलाये, दिनगरे । मुक्त-मुक्ता,

मोती। चित्रर=बाल।

(३) ध्यशान'

१—उद्र-पेट । परसन-छूता है । हाला-राह । तुचा=चमदा । र--कपाल-किया विरुद्ध धर्म के अनुसार एक मृतक-संस्कार। को मृतक की कार्त्याप्टि किया करता है, यह उसके रिए में

एक जाठी से खंद कर देता है। कहते हैं, इस से मृतक की जीवात्मा कर्ष्यगामिना हो जाती है, अर्थात् वह मुक्त हो जाता है। भोज-भोजन । सुभग-सुन्दर । कुर=एक महा प्रनापी राजा, जिसकी संवात कीरव के नाम से प्रसिद्ध है। वधीय=एक परमत्यागी ऋषि, जिन्होंने इह को इनासुर-वध के लिए, बज बनाने के अर्थ अपनी अस्थियां जीवित

अवस्था में ही दे दी थीं। उचादन मण=उचादन सत्र, इस सत्र के प्रयोग से जिसपर इसका प्रयोग किया जाता है उसका किसी विशेष स्वक्ति या स्थान से चित्र उचट जाता है। स्रोपरी=स्रोपनी। भाषातिक-वाममार्ग के अनुसार एक साधक, जोनर-कपाल जिए इहना है।

४-- धूस तिना की-निर्धू म, धधकनी हुई । विदेशम-पत्ती । लोग-छुगाई-पुरुष चौर क्षी । निसाकर-चंद्रमा । छहु-रुधिर । मसान-स्मरान ।

५-ररत-रट रहे है, १.ज्य करते हैं, रोते है। रव-राज्य । हर-गिह-पक्ती-विशेष । अयह-अयंकर । दव-धाग । तुमुल= इन्द्र, पना, करवधिक ।

(३) भेम-बनाय

१- सुरम-यात । लेह उदारी-यचालो, उद्घार करदी ।

- रे-एरूकत-हिल्ली हुई। सात है गायो स्पृष केल धार कर गर्यो । किकिजी-करपूर्ता । पियरोपट-पोतांवर । परिकर-पेटा । कत्वारी-वतमाली, आकृष्यम । दोनी नारी संसार-सागर से पार कर दिवा . गुक्त कर दिया । जुमको देखो । नीक-चपटी नरह , ध्यानपुरुक ।
- У---चान-नलवार । प्रवाधी-नगन-वा । पनियायै विश्वास वरे । इतार-नन्धव प्रकार का बाह्या पाट । पारणी-केला । प्रज प्रि-गोषिया प्रदेश में बहुनी है कि चर्यने हान सभी चान में हमारे प्रेममण दन को तुम जिनना ही बाडीने उनना ही वह तहत्वहा होना जायदा .

६०० प्रतित-क्यारी पाविकी का विकार क्योक्ति हो था। वीरक्य एक सिंग जिले किन्तु अनकार प्रत्या करते हैं । सुन्तार पुरस्का व्यवस्थान प्रति करीन का कन्त्र

क्षात्रार्वा । वे पर विस्तार्वा विष्यु विशेष्ट्रा वार्यः वार्यः । स्वत्रा विष्यु विस्तार्वे विष्यु विष्यु विस्तारम् ।

हिन्दी-पच-रत्नावरी 110 पर का पत्ती, जो इबर-उधर उड़ कर बाद में फिर जशम

पर ही। आ जाता है: जिसे अनन्य रीति से एक काही आश्रय है। पराय-इसरे । वादिहि-स्वर्धही ।

८-सरग-स्थर्ग । हेम=मोना । बेरी=बेडी । परमारय=मोस्रमार्ग । श्वारथ≃ञ्चवदार । फेरी⇒धंतर । चायुम=चायु । जार≖ গ্ৰহন্ত বিদ্যা

५--अवियल-चटल, निरंतर । दहते-जन्म देते ।

२६—प्रतापनारायण मिश्र की कुछ कविमार्ग

.) । जनगैत साध*नी* १—प्रतिपार पप्तन-पोषण । विधा-स्वशः, ऋष्ट । निवास सना-

रो थिन्कुन स्रवाही, निषट मृद्ध। कीरति कीति, दश। स्था समृतःसमर्वं शांकवान्ताः पकतः कमनः बलिहारी र्योद्यावर

---- प्रयार यहभार, प्रभारम्य । प्रतिमी प्रातिशय,यहन साधक ।

भेरने=काई कोट ओर से । निकेतन=स्थान ।

) व्हाया --- तकस्यायः रायतः नाका वस आगापा, हेरान हा गयः । गर्न-

चटक ९क्शियान । महिस=सद । खन≃त्तरा ! निस्पत्रस्य विस्कृतः, सत्र । तम्छन नवस्त् । **प्रकि**ल **धर** ।

• —बार्नः किसी । विक्या समय । सदृङ् सुडही । दौँय बार् ।

. — प्रावसी एकस पापकान स्वोधका हो गया। पाकि नै= "करण्य सफ्ट हो सखा शीडी क्सर सी । रशवन≂राव । ४—यूते=यलपर, सहारे से । डोलिन-डालित हैं=चलते-फिरते हैं। खलारत फिर्न रहन=्रेंठते फिर्ने थे। ऐम्यन का=ऐसीका। हनव्हें।

-(३) पुरका धर

१—मनुवोँ=मन । धृतत=ठगता है । गोहरावन=पुकारता है । साह्य=मालिकः ईश्वर । घट-घट-शारि-शरीर, हृदय-हृदय । हियाँ=यहाँ । सयाना=चतुर ।

२—डोरी=स्थान । गोरी=स्थी । भोरी=भोली, नृठी । नारी=तेरी ।

.२७--रंक-रोटन १--मृत्युपर्यन्त=मीन् तक । ऋतुभृत≈ऋतुभव किया दुआ,

भोगा हुआ। कप्र न होगा≈कार्य न होगाः उइ न जायगा, नाश न होगा। रे—वर्ण-उपाधि≈खद्धरों का ख़िताय—जैसे के सी एस आई.

डी लिट् प्रादि। ५-वाध वाप की पाग=पिता की सारी जिम्मेदारी अपने उपन लेकर, पिठा का स्थानापत्र होकर । बुनशा-बुदुरथ । निरं-

कुश=स्यतंत्र । ६--कोशःस्यज्ञाना। संधितः जमा किया हुन्या। परिग्णामः नतीचा ।

८--आराम=वाग।

धन दौलन ।

१८---दुर्वाद=युरं यचन, निदा ।

११-विग्र-पंडित, विलानी । धर्म-पुरंधर=धर्म वा बीम, उठाने बाले, परम धार्मिक ।

हिन्दी-पद्य-स्टनावली १६—विरद्=यश । रस=चानंद, मंगल । ३—पौरुप=पुरुषार्थ । विषाद≕शोक ।

५ –हाम=व्यवनि । चारम्य=जिसका दसन न किया जा सके। जो दर सहो सके।

१६—गोरस=दूध-दही । पिसान=चुन, जाटा ।

 अ—चोस्या=यदिया। बाह जाते हैं=सचल जाते हैं। सनमानी= मनपारी । काइक ने जे = इ.स्य में इह्य के दुकड़े चुकड़े करके। प्र⊸क्षत-कृतकर=प्रमक्ष हो होकर । व्यंत्रन∽सोजन की चीरों । पानेपाले=न्यानेवाले. न्याने के चर्ध में 'पाने' का प्रयोग

माध्यां मे-विशेष कर बेळाडी मे-पाया जाता है। ··-रफा-दो पैसा, बनना से टका' से रुपवे का बोध होता है।

त्रायमां' न भी दका में रुपये का बांध कराया है।

- / -- द्राप्त महा। महंगी सह से चावल प्रका कर महेरी यनायी भाना है। इसका प्रचलन मत और वंदेलरबढ़ से श्राधिक है।

-३—प्रतियाग प्रताकार वर करने का उपाय । ·४ - करोर सिंह । तात शेळ । यशहरू सप । अस्पिर च**वर**। ার্থন বিবর্ণ ।

•५--प्रतियासार जन्म । - 2- 23 AULUE 1 - अ—- अप्रतिष्ट भारत । १९८५ - ३ स्व व ४ ४८ विषा परि-प्रमान

-५-वसाहार रूपड और साचन (३०--- नगर्ना समार रह गराव ।



१५--नाष्ट्र सहाते हैं=पार करते हैं।प्रथक्=भन्नग।रसमय-भागरमय । अञ्चानी=धनमित्र । ४६—वाश=१देश । शिवितित=दीला । बाह्=यता=व्यिकता । चत्ररह≈रका हुआ। १ --- रापान त्=कोधारित । भावास=भिवास-स्थान । भरोप= मधर्म ।

दिन्दी-पण-रन्नावर्छ।

828

२६---लदमी-वजा · -- सर्वापम=सप उपमात्रों के योग्य । जावि=कावि, प्रदारा । नम=धंगाः। • --- बनवण् • मरे हुए के समान । निराफल=निग्फल । सुरपनि=

१८९ । रह मिन सर जाय चैनवारंगी से वास्त्री की वर्ष रात रहा। · - चपुरान विशेषांत्रलाताना विश्वा है । 'वन्त्रेक्टिन । मीरिक JETT

1112 25111 P 11म (ब=ताच अवा: अअ: क्षांश (बन्द्रपूर्ण) --- ब्रामा परा स्थवर नाग्या वर्षाः तराष्ट्र राजनीत्र 144 HETTER 1451

. 11 47 217 217 ardent, antenin an Santaga ;

रहरीता प्रशास रहाजन गाहरता प्रशासका

च्यारा विकास

. 4-1"7" 1 MAT

. या १९४१ १९४० । जन्माना वर्णनेत्रा १९ वाजा अध्यो

24 7×1



हिन्दी पश्च-रनावनी 41 ५—इंद्रचाप=इस्ट्रधनुष । बलाकावर्रा=बगुलों की पंक्ति । समीः

शोभित । पावसी-वर्षाके ।

६—पीयुष चामृत । भूवि≔षहत । मामान्यम्, जाधार । कलश्र=मी । स्माधव-छक्रमीवद्यमे । .

१५- बोजिम्बिनी=नेजिमिनी । श्रीमावर्का=भौगे की पंकि । भई रक्त -श्रासुरागी, शक्त ।

चौर काला रेंग यहाँ गंबा, सरस्वता चौर यमुना में मान्ययं है ।

 --वातं∗हवा । स्थानाथ सहद । -- यजन प्जन । स्ट्र चन्यक स्था।

३ ४ — शक्ति-श्रमार · -- वरः हदः कपिन हो हदः हर तथः इन्द्रशिल-सेपनादः।

भीमात्र-११मण शाला (१) व्यक्षविशेष (३) 1771

- - im ; न १९ ६ वर स्वास्त्रास्त्र । त्व वर्ड-व्यवस्य । इत्हारि -2500 451 75

ः १६४ (२ व्याचन राज्य राज्यम् बहासः, सृविद्यम् । धारत द्याराया क्यारायक स्वत्री भगः चनुरासी

187 21 E 1 51 इन्स्वनाव इन् व द्वन्त्वन छ।व्यास सहायावस्यः

BULLET BUT BURE

一 まてまわり と 内 まいこのおき

प-र्याग्न्युथ । विल्क्वियिधिय बीरन्तिल विल्ला हुन्मा जल; विडोहक से विवसी की वर्षण किया जाता है। र-विविधिया=मृतक-संस्कार । शिहा=जहायु से नाम्यूर्य है ।

१-मिक्सियन क्षित्रके पास कृष्ट्र भी न हो, पड़ाही गृशिय। ५--राप=बाद्धा, खन्य ।

६—जनग=तन्पनिक्ला । व्यन्धं=व्यनिष्ट, सुगई । विवह सहाह ।

4-स्वरक्षमार्ग ।

१--मंजीवना=बाह शृटी जिसके सेवन से मुत्रपाय भी जी इंडना है। कृष जायगा=श्राप चल वसेंगे।

र-वायु का पुत्र ह्नुमान । वंदा-वंदनीय । ३५--- व्रजभाषा

^१—भुयन-विदिन-लोक-प्रसिद्ध । शुवि=भृमि । रस पूर्ण=श्रानंद-मय । विधुराई=पै.लाई । मंजु=मुन्दर । सुचराई=चतुराई ।

--फाम-श्रभिराम=इन्छाएँ पृरी फरनेवाले । सहदय मनि= मरस युद्धियांल ।

रमते हैं।

४-फलिदिनि-यमुना । जीवन=जल ।

५--फिसलहर≈फि के पापों को नाश करनेवाला। मज्ञ-सुन्दर । सुचि≃गुचि, पवित्र ।

६--पूल=किनारा । कुसुमित=फूले हुए। श्रोक=स्थान । निकंदन-नाराकर्ना । सुकुलित=प्रफुहित ।

हिन्दी-यश-स्मावली 84. ----मानी-रचना, कविना । रहेवत-रहेशा हुआ । भाकर-सार्विः शहरा-स्थान । ८-- प्रशुक्ता उत्कंता । बहाँग-बहमिन्ध्स-पृत्त-करं। भी भ्रमर । भ्राजित-शोधिन है। ५---आग्मला पत्री । ध्यक्त-प्रकट । १०--रमतेमः=जानेद् की भाग । योग=मेन । विवेनी गंगा, युन् श्रीर सरस्वती की संयुक्त घाराणे। ११-- जवारथ यथाध । सचिद-मचति हट करके । १--- प्रवर्मन=प्रवर्भप, बार्डा । धारत बार्य । 13--- बुटि : कारी । परन आई पूर्व करनी आई है। सिरहारे ४ — मिनाम विकास श्विमाना संकार माना ४० हरका प्रथम पांची 1 - - 4/14/14 112 1 · . The AR THE E M. THE RE MINTE an anguara menta ora ana • = १,४१५८ ४ ३३१४ ४ १९ । अ.स. स्टेस्ट १३११ स्टब्स E -3 44 1 18456 824 12 81914 81 . - -- बार्यान यह का क्षित्रमध्यम् शमन the the an all the extreme to the ४—भीर≈भीड ।

५-हिगय गयो=यो गया। टकटाय=टक लगाकर। नै=नम्र। दीठि≠तृष्टि ।

^६—भव विभव≈सांसारिक ऐश्वर्य । विभृति=ईश्वरता । सहिम= दवकर, इर कर।

७-कथा=फथरी, गृहर्ती।

८-दाय=म्बल्य । संकेत=इराग्य । त्र्यादेश=त्र्याद्या ।

९—परिधान≔कस्त । सैनिक=सिपार्हा ।

१०—बिहाय≕छोडकर् ।

११--वास=बन्द्र । कपाय≈गेरुवा, संन्यासियों का बन्द्र'। ंं

१३—मर्त्य≃मरनेवाले, श्रानित्य । वर्म=कवच । कतहुँ≂कहीं । श्रेष्टतर=बहुत ही श्रेष्ट ।ंतथागत≃युद्ध । नन≕मुका हुऋा ।

निधि=संपत्ति ।

!४—चकराय≕चकित हो कर । संपुटित≈भरे हुए हैं, व्याप हैं ।

१५- श्रष्टांग मर्ग=वाद्व धर्म के श्रनुसार सम्यक् दृष्टि, सम्यक व्यायाम, सम्बद्ध संयम आदि आठ साधन, जिन्हें साधने से जीव 'बुद्ध' हो जाता है । बुक्ताय=समन्ता कर । रंक= ग्रीय। नीच-शृह । मोपान=सीटी ।

६६—जरुठ-युद्रा। भवचक=संसार का, जन्म-मरण का पक। मिर्वान मोच् । प्रामाद-महल । पीयप=ध्यमृत ।

१७--यशोधरा=नीतम युद्ध की म्बी । स्त्राभा=कांति ।

३७—पार्थ-प्रतिज्ञा

६—कातल दर्थली । यगल⇒दोनों । २.--बाहरवि=प्रात कालीन सूर्य । बोधित हुन्ना-साह्यम हुन्य । १५२

सरकः । ' --- शार न्द्रचा वाग्य का निशानाः।

-- १९४% श्रीक व्यव् ।

~ 5.441 -45.54 #2.124.14.

2"11-3 -11

हिन्दी-पच-रञ्जावली

३-- धरणिमा=लासी । अनर≥धाग । ४—नामापुट≈नवुषे, नधुने । भृरि≈बहुन । भीपगःभवंदर।

—नियन=वध । क्यूक-जुन्त हुवा । रीरव=एक महा भ^{प्रद}

—किसर=देव-यानि विशेष । अ न्दृतिन कमरवद्यांतिन कर्मूण

ध्रम्युन-१२^०णु सरकान अस्त्राम पुरुवर्गन**ः सार**्

-- 'वर्गचर=सापः 'वर्षिच- उसः बाह्य-समुद्र की भागः स्थान

1500

योप=शब्द । फण्=पत्न । पत्रि=माँप ।

·--परित हुम्-चिम गये । विष्कृतित=ऋइकते हुस्।परा=धमः।

६-- उनाप- जलन । चारिद्रम=राजुओं की मारनेवाने । कर्मा होष । घचरा-विज्ञती । जनुर-मेष ।

» —पार्थ=एवा के पुत्र धार्मन । सरवर=शीज ।



Garte water is "

a - 2 den amora ara ran we preten fern master to a trickly by the mile of the A THE ST CLASS SHOP ELERY OF THE TO · 化二甲 1941 医甲磺胺甲甲磺胺甲甲磺胺甲磺甲磺 was the field of the fire stage of special and was and for it the end of its a way or to part ore in to elegan and site . 1 - , 1, 4

> 温之之時 化 正 二十十年 的以下的证券下 9 1 4 \$ 1000 per cel est

and the state of the state of - 1 1 SIGN 1 PH

. 44 141111 * - ** *1 T % - , 357 14 t pt . Twee 118

> +1 11 9 80 A CHARLE A

1" 0 " - - # 23 pm * 4 mg - 2 mg - 1 .



will eland !

I INTO IN THIS HER HER HER HAVE A RESERVENT \$ " SAME. arres ::- er e. avenir a ere siera de abere a great must must be there is all the state of the state part for the first of the second of the second er with a come a terr proper of the graph for Males ar over to a refet fact or to id the recognition of deposits of the second section and the

may now a grand exercise. F . 9 , 1720 WA (44 80 T 1) 180 5. F .

. 4



200 हिन्दी-पच-रत्नावसी रसन्यानि –यह दिहाँ के पठान थे। शादी स्तन्यान में

इनका जन्म हुन्या। यहले इनका नाम इत्रराहीम था। स्मरण रहे, यह पिहानीवाले इवराईम नहीं थे । इनका जन्म अनुमानतः मवन् १६१५ के लगभग हुआ। यवावस्था में यह किसी बनिये के लड़के पर बड़े ही आशक्त थे। बीखे, यह प्रेम श्रीकृत्य की कीर

पलट गया। यह शुमाई विद्रहानाथजी के छ्वापात्र शिष्य थे। PC४ वैप्युवो को बार्गा को इनको भी वार्ता है। रसशानिजी परम वमी स्रीर बैध्यव थे। इन्होंने जनमापा में बड़ी ही सक्छता के माथ कविता की है। इनकी भाषा से शब्दाडम्बर बहुत ही कम है। प्रेम का तो इन्होंने ऐसा बिद्य सीबा है कि देखते ही बनता है। 'सजान रमराम' और 'में म-बाटिका' नामक इनके दो मन्ध 'मलने हैं। चनमान से इनका देहान्द सक्त १६८५ के लगभग हजा ।

सेनारिन-स्वापति का जन्म सवन १६४५ के लगभग ्या । पर चन्पगटर जिला वृजन्दगहर, के निदासीथे । 'पना हा सम तगावर छोर विनामह हा वरशराम था। हारामणि शक्तित नामक काइ साजन इनक गुरू थे । इनना परिषय सेनापनि न स्वय श्राप्त एक कविन स दिया है। पहल यह बहे ही श्रीमाधी

हाते वे पाल बगवनबन्ध हा संघे। जुनार श्रीर शाल, दोसी र रमा ॥ इन्हार स्वत्व स्थित है। यह संबंधन हा महास्त्रि उ इनका रचन चन हार सामार्था नहीं है। इनके रिल्ड वर्तिन पट हा सन्दर्भ दे प्रत्या क्षिप्र वर्तिन स्वाहर समाप क्रम क्रिना है, जा यस अवदर्गन हा है। इनदा मृत्युदान

≈ १०० € सम्बद्धा



२२० दिनीनगण्यात्री साम्भवेतीः स्वतः स्टब्स्स्य स्टब्स्स्य

प्राप्त हुई थी। इनका जनम्म, कानुसाननः, संबन् १६७० में हुमा। इनका सम्मान्तान निकर्शपुर (विश्वित्तपुर) माना जाता है, से कानपुर विन्ते में यानुसा के किनार पर है। यह कारवहन्त मान्य

कामद्भ विन्हें में यामा के किमारे वर है। यह कारव्युटन मास्त्र में। ऐत्या का नाम राजाकर किमारी था। यह चार मार्ड में। मार्ग ही कहे थे। मनिवास नी महाकृषि में। मूर्यण के पृहसाण व्याप्यसत्ता बोल्केसरी हिवसी थे। इनकी कृषिण में

न्याप्रपत्ता बोर-केरारी शिवासी थे। इनेशे कीमा में मार्ग्यमा क्रूप्ट कर भी हुई है। दिशे-गारित्य से मूलन की रन के एक सात्र सताकरि हैं, इन्से गतिक भी कार्यन मीरी इन्सी कीमा चान भी सुन्याव दिन्हु गारि की निभाज नमी से नीप का संधार करता है। सब सिलाकर इन्होंने पीचक

इनहीं दिशित चाम भी भूतवाय हिन्दू गाति की निभाण ^{मन} में निरा दा संधार करती है। सब मिताकर इन्होंने पीचनी मन्द दिसे, निनसे जित्तमान्यण कीर शिवाधायों। वा^{धिर} विसर्द हैं। इनहां गोरास्त्र नवाइ ४००० के समस्य हुआ। समिद्रास- पर महाकृति भूषण के दोने भारि थे। इनवा

भारतम्बर्धाः पर भारतम्ब सूर्यम् पर वाद्य वाद्य ने कि वृश्चित्रमान स्थापनामान साव्य २०६३ से २०६४ तक है। वृश्चित्रमान स्थापनामान स्थापन स्थापनामान स्थापनामान स्थापनामान स्थापनामान स्थापनामान स्थापनामान स्थापन स्थापनामान स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

राद्र २०६६ र त्य १९व च इतका स्थान क्षा एक एक एक है। प्रभाव भीर जा १००० हर चार दुवा है चापा यहां ही हुई भारत भीर जा १००० हर चार प्रचा है। एवं दुवा स्थाप रुप्ता १९७० हरे

व्यक्ति (तर १० मान १० वर्ग स्ट प्रतास प्रकास स्ट प्रतास व उत्तर गान १० १० वर्ग सामुख्या उत्तरा स्टब्स्ट वर्गा र उत्तराम २००१ प्रतास प्रतास स्टाप्ट

स्तर है। प्रश्वान प्रभाग अपने प्रश्वास प्रमाण प्रभाग प्रभाग प्रभाग कर स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप

the annea save the action the



हिण्दी-पत्त रस्नायली नागरीयास-इनका चमली नाम मार्थतसिंह या। यह त्यागदार्थास थे। प्रमुखा जन्म संबग् १७५६ में हुन्या। यह

हाराज राजनिह के पुत्र थे। महाराज सार्वतिन सर्वे बीर रीर निर्भय थे। इस समय राजवाती कवनगर में थी। राजि गाउँ परास्तिक इनमें सदा लडते-मगदने वहने थे। गुर-करई

। इवदर इन्होंने राजपाट छोड़ दिया और जनवाम कार्ते लें । अम-पुरशास्त्र से इतहा च्युवे हैस था। यह बहमहुर निष्य थे। कविता में भावना साम मागरीवास या सागरिया श्वन व । यह महाराज वद ही विरक्त, चानुरासी और ऋष कवि । इसट वटा की शैटी खरवासजी की रचना से सियमी-गुजनी । सब । मताचर दुन्हाने ३२ छाटे-माँट प्रन्थ निले । स्टीमा की

रत्या धन को है। बढ़ी कही यह फारसी चीर समापुनानी भाषा ा था सद है। रचना बढा हो शरम चीर वनगणिती है। अमा । शह बाध सबन १८३४ स **हना।** र्गार्थिक कवित्राच उनका अवित्रम व्यवस्य व्यवस

र ४ प्रमानत इतर कन स्र १७४ सहचा दहा साम **है।** मह कुर्वादर्श वहन 'अद हैं जीतिशाव पर झाराने की नवीं क्या है व बह का साही दे वहां स्वितियाँ स्व मार्क auf gant bes ein geran wurfe a unf Pal दांत है कर र के बार हा रखर हुए है इसका मही। पर इस राज से केर्द्र न । कार भारत्य काला है। सामग्र म वा घर १८९९

4 500 0 1 00 च्या कर नगर कार स्था कर का अन्य सर्व १८१० हैं

egr jon nouen e nin bi ny kaominina di 14k



दिस्री-पण-समावश्री सारमेन्यू हरिरणन्त्र-विद्यास ग्राम्य व्यवसार रेग

404

राव का उक्रवण के घरा में, संवत् १९०० में काशी में, मानू द्वित्त्वर का जम्म हुया। इतके विना का नाव गोशारुपेंड था, जो इत भाग्य सन्द्र स्वीत कृषि थे। कृषि-संसार है। बालू गांगाजगेंड है सिरियरनाम के नाम से प्रशिव हैं। बाचु रायान्य इसी हरिस्वी ना प वय की काल्यावाधा है। ती लीड कर स्थापताणी है। गरे

मर क बार्तार ना थे ही, विमा के स्वनस्थ ही जाते पर यह सार्व का तथ रामा शिवयसाच सिकारेटिक्ट इसटे विचासक से । उनमे इन्डान कामचाराक अंतर मां पड़ी । जिनी भी कोर नापुमाहक क

अस 'इना दिन बहन हता। स्थान बहन हरहाने कहि ब्यम भूता नाम कर एक सामिक उन रेनकाचा । इसके बार की र मी सह दवलविकार किराडी हे करत रेट्या का वर्ष भारत गरी

इंड इन्ट ल लागा स्थापन करवर्तवर्गात सार्विक

MAN AN COM W. C. OF AN ARRAY CO. AREA T.

we we can get the and a contract the to come a large service and at the

*** ** ** * * * ** ** ** ** ** ***

the control with a state of the 1 2 22 40 All W

are the second of the and the same of the same of the same to

date to a se or graduate

म्प्य छित्रे । जान पड़ता है, वायूसाह्य साहित्य नेवा फरने के त्यि ही घवतीं हुए थे । जब तक हिंदी भाषा रहेगी, तब तक भारतन्दु बायू हरिश्चन्द्र का भी नाम रहेगा । संबन् १९४२ में यह गोलाकपास का सिखार गये ।

मतापनारायण मिश्र-मिश्रजी का जन्म संवत् १९१३ में हुचा । इनके विता का नाम पंटित संकटात्रसाद था । यह कान्य-पुरत माताण थे। इन्होंने हिन्दी, उर्द, फारसी और संस्कृत में पन्छी योग्यता प्राप्त फरली। छांगरेची का बहुत ही साधारण ज्ञांन था। बावू हरिश्चन्द्र की रचनाची को यह विद्यार्थि-अवस्था स भी बहु चोब से पट्ने थे। उनके पटन से पाविता करने की शीर यह प्रयुक्त हो गर्य । हलके फांचलान्गुर फालपुर के सुप्रसिद्ध फांब "तिवित (तो वताप्रसाद विषाती । ध । सन ६ ८८३ में सिधडी न 'माप्ताण नामव १५ सामिय पः निवालना गुरु किया। यह बहारी विराप्त एक एउ घर एक स्वयं तक व्यलना दला। हार दिस्त किल्ला १ कार्या १, व व्यवदार क्ष्यांचय रहा ६समा water and the second the second the contract

n de services La partir de la companya de la comp La companya de l

कानपुर स प्रचर्श कवि कशक्ति का विकास होते. जसा र वर्गते भी : घर घामी जन्मन्ति में यह विशि मा कार्य कार्य हों। मरद्रभारात 🖩 यर खर्णद्रवैध समन्द्रि जाने हैं । आतका भी धार बैगक है। कान है। यहने यह अलगाया से अनिया कारे में कीय राजियों में बरने अते। व्यक्तियानी की इसाने कहा मरिमार्गे र र र प दिया है। बायको रचनाओं में मीरिक्स वर्णे भागा म गाउँ माना है । काम बाजिक भीर सुकत्र माना प्रकार है हरा में बनी की रामान संस्था रहने हैं । यह साधारण बन हरे है। समानार्थ र कलात विमानम से कहित-मत मान की की में कर सारत हैं। इनहीं की धनिमा दिल्लों में ही मिली शर्मा है। कार्यायमा ना है। व्यापात्र प्रमानि कवितार्ग प्राप्त संगान संगोत होते हा बाता है। एतान लाइन यह मधीची की सरिवार WELL AND MICH A MIX WHEN IN MIN AT WHITH ALL Egy peren e to se etc. mie frietitet aufg greit to a war a way of the contract of SET SE STORE OF THE RESIDENCE OF THE PARTY me alone into \$ 1000 - comment and a second second second I are a ser or a rain work of any or gray

रिमी-पचनाना स्री

801



+10 रिओ-पश्चनागरी

मानवाह है। बाद बतामा बाह्य है। परं, दास्मी, संस्था, बराज्य कीर दिन्दी में बाग की बारादी बोग्गमा है। मिस संप्राप क याता शुमार्गन्तका आप क कवितान्त्रक है। बाप बीत को

तक नार्यन्त्र ह सबूर कानुनाह रह नहार है। अब पेशन ने त है की र कार्य से दिल्य विश्व विद्यालय में किसी के मारिनिक नक लगह है , तथ बहैर वण बाले ही बाव दें भी बाली की दिलां d . ad a wire a te airei et affant ferria is, wie reffrirft

त व्यवस है आना का कार्यक्त सहायान विवयनाम की Tax it ates ales tremedate it me en ni wit te

tie a grant at the fe or store of wither all second and

P mir tragi miter a noting & dags afrieng &

THE STANDARD STORES OF THE PARTY OF THE PARTY WE

Captering a contint or estuels at

4 1 9 1 1 4 4 1 1 1 KH

West and of the annual to the from

To there is no so the group of the graph

में विरले ही मिलेंगे। श्राप का जीवन, वाटाव में, म्नुत्य श्रीर धन्य है।

जगन्नाधदास 'रलाकरः--रवाकरजी का जन्म काशी

पुरी में, संवन् १९२३ में, हुआ । यह स्त्रमाल वैश्य स्त्रीर राधा-रमणी वैष्णुव हैं। इन के पिता का नाम बावू पुरुषोत्तमदास था १ सन १८९२ में स्त्रापने बी० ए० की परीक्षा पास की । सन् १९०२ में यह स्व० स्त्रयोध्या-नरेश के प्राइवेट सेकटरी के पद पर नियुक्त हुए । पीछे श्रीमहारानी साहवा ने इन्हें स्त्रपना प्राइवेट सेकटरी बना लिया । स्त्रम भी स्त्राप एक प्रकार से उसी पद पर हैं। कारमी के स्त्राप श्रन्थे जाता हैं। कविता बन्नभापा में करते हैं। स्त्राप का माहिन्यक ज्ञान बहुन बदा-चदा है। कविता मरम स्त्रीर भावमधी होती है।

गय देवीप्रसाद 'पूरा' — रायमाहय भद्रम, जिला-जानपुर, के रहनवाल था। जवलपुर में इन्होंने शिला पार्ट थी। छाप बीर एट, बीर एलर था। कानपुर में बकालत करने थे। याद ही दिनों में नामी अकीर ही गये। नगर भर के लोग इन्हें चाहन थे, क्यांक बड़े ही मिलनमार, परोपकारी और सन्चे था। रायमाहय मार्वजनिक कार्यों में सदा भाग लिया करने थे। छाप थियांसाफिस्ट थे। सनाननवम पर वही श्रद्धा थी। हिद्दी पर उनका विशेष रूप में प्रेम था। यागवर यावन और चट्ठकला भानुकुमार नाटक पूण्जी की उत्तम रचनाओं में हैं। आपकी कविता वही चटींनी होनी थी। कविता अधिकतर यह इजभाषा

में करने थे। इनका माहित्यिक ज्ञान प्रामाणिक माना जाता था। इस युग केहिटी-कवियों में पूर्णजी का स्थान, वास्तव में, उंद्या है।

हिंग्यो चन-एनाफडी त्म बार्क प्रमा का बनी हो। सरम कौर आवार्ण कविता है। र राज्यारिय वेशियों का कावस्य ही शह ही के वृथे प्रश्ति राज

ा बतारपुरुष **द**राजा कार्टिक । शैविकीसरण ग्राम-विस्तवि, वीधी, वे सुनि ध व्यत व्यवन् रहत्यत्रे में मुका । इत्ये विता, अध्यत्मामा व्यक्ति वेशामान

ा रहते हैं। इसका बीच बाड हैं, जिलांग बीवियासम शास्त्रजी त करदा कांगम अन्त है। तमनी सरीचांती के बरन कांत्र है। रान्तिक करिशा प्राण्य स इत्तर्देश्चित्रक्तिकी भागमा कान्त्र है। च्याना ना इत्या दानवा बा बहुता चार्म माने हैं। इनकी ना हर तक्कवा से माहरूबाइन्ह कीए अवद्यानक बहुत प्रशिव sach an ge albuiten wie alle gent en ein t. लन्द्रमा का कार मुख्या हा काय प्यान रहता है हाएती mar nega sam mer men die tarrett ? na

